Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(सूरः अन्फ़ाल : 28)

(अनुवाद) हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह और (उसके) रसूल से ख़ियानत न करो अन्यथा तुम उसके नतीजा में ख़ुद अपनी अमानतों से ख़ियानत करने लगोगे। जबकि तुम (इस ख़ियानत को) जानते होगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-8

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

2 शाबान 1444 हिज्री कमरी, 23 तबलीग़ 1402 हिज्री शम्सी, 23 फ़रवरी 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मदीना की फ़ज़ीलत

(1871) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझे ऐसी बस्ती (में जाने) का हुक्म हुआ जो दूसरी बस्तियों को खा जाएगी। उसे यसरब कहते हैं और वह (बस्ती) मदीना है जो (बुरे) लोगों को (रद्दी की तरह) निकाल देगी, जिस तरह भट्टी लोहे की मेल कुचैल को निकाल देती है।

नोट : हज़रत-ए-सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउ ल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो इसकी तशरीह में फ़रमाते हैं : मदीना की हुर्मत उसी सूरत में पूर्णतः क़ायम रह सकती थी कि शरारत करने वाले लोग इस में न रहे। बाद के वाक़ियात ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस कथन के हर शब्द का सत्यापन किया। यहूदी क़बायल ने अनुबंध तोड़ा और बैरूनी दुश्मनों से ख़ुफ़ीया साज़िशें करके मदीना पर हमला करवाया अंततः अपनी ग़द्दारी के नतीजा में ऐक के बाद दीगरे मदीना से निकाल दिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अलफ़ाज़ का दूसरा हिस्सा भी उस वक़्त पूरा हुआ जब मदीना आलमे इस्लामी का प्रथम मर्कज़ बना और ख़ुलफ़ा-ए-राशेदीन के अह्द-ए-मुबारक में अज़ी-मुश्शान फ़ुतूहात हासिल हुईं। दूसरी बस्तियों को खा जाने का मफ़हूम भी यही है कि वे मग़लूब हो जाएँगी।

सही बुख़ारी, भाग 3 किताब फ़ज़ायल मदीना, प्रकाशन 2008

★ ★ ★

एक मुस्लमान के लिए ज़रूरी है कि इस ज़माना के मध्य जो फ़िल्ला इस्लाम पर पड़ा हुआ है उसके दूर करने में कुछ हिस्सा ले

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

प्रारब्ध से निश्चित

फ़रमाया : "अभी हमारे मुख़ालिफ़ों में से बहुत से आदमी ऐसे भी हैं जिनका हमारी जमाअत में दाख़िल होना निश्चित है। वे मुख़ालफ़त करते हैं पर फ़रिश्ते उनको देखकर हंसते हैं कि तुम अंततः उन ही लोगों में शामिल हो जाओगे। वे हमारी मख़फ़ी जमाअत है जो कि हमारे साथ एक दिन मिल जाएगी।"

इस ज़माने की बड़ी इबादत

"एक मुस्लमान के लिए ज़रूरी है कि इस ज़माना के दरमयान जो फ़िल्ला इस्लाम पर पड़ा हुआ है उस के दूर करने में कुछ हिस्सा ले जाए। बड़ी इबादत यही है कि इस फ़िल्ला के दूर करने में हर एक हिस्सा ले। इस वक़्त जो बदियाँ और गुस्ताख़ियाँ फैली हुई हैं,चाहिए कि अपनी तक़रीर और इल्म के साथ और हर एक क़ुव्वत के साथ जो उस को दी गई है मुख़लेसीन कोशिश के साथ इन बातों को दुनिया से उठावें। अगर इसी दुनिया में किसी को आराम और लज़्ज़त मिल गई तो क्या फ़ायदा। अगर दुनिया में ही अजर पा लिया तो क्या हासिल। उक़्बा का सवाब लो, जिसका इंतेहा नहीं। हर एक को ख़ुदा की तौहीद-ओ-तफ़रीद के लिए ऐसा जोश होना चाहिए। जैसा ख़ुद ख़ुदा को अपनी तौहीद का जोश है। ग़ौर करो कि दुनिया में इस तरह का मज़लूम कहाँ मिलेगा। जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। कोई गंद और गाली और दुश्नाम नहीं जो आपकी तरफ़ न फेंकी गई हो। क्या यह वक़्त है कि मुस्लमान ख़ामोश हो कर बैठें रहें? अगर उस वक़्त में कोई खड़ा नहीं होता और हक़ की गवाही देकर झूठे के मुँह को बंद नहीं करता और जायज़ रखता है कि काफ़िर बे-हयाई से हमारे नबी पर इत्तेहाम लगाए जाए और लोगों को गुमराह करता जाए तो याद रखो कि वो बे-शक बड़ी बाज़पुर्स के नीचे है। चाहिए कि जो कुछ इलम और वाक़फ़ीयत तुमको हासिल है वह इस राह में ख़र्च करो और लोगों को इस मुसीबत से बचाओ। हदीस से साबित है कि अगर तुम दज्जाल को न मॉरो तब भी वह तो मर ही जाएगा। मिसल मशहूर है हर कमाले राज़ वाले। तेरहवीं सदी से यह आफ़तें शुरू हुईं और अब वक़्त क़रीब है कि इस का ख़ातमा हो जाए हर एक का फ़र्ज़ है कि जहां तक हो सके पूरी कोशिश करे। नूर और रोशनी लोगों दिखाए।

(मल् फ़ूज़ात, भाग अव्वल, पृष्ठ 355 356 से 357 मुद्रित 2018 कादियान)

★ ★ ★

अगर सारी कायनात एक ज़ंजीर की कड़ियों पर मुश्तमिल है तो इस का बनाने वाला एक ही ख़ुदा तस्लीम करना पड़ेगा

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत नहल् आयत : 23 إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُّنكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُونَ तक की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : यह जो फ़रमाया कि तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है। यह ख़ाली दावा नहीं। क़ुरआन-ए-करीम जब मुनकिरों से ख़िताब करता है तो सिर्फ दावा पेश नहीं करता क्योंकि उन पर ख़ाली दावा का असर नहीं हो सकता बल्कि वह ऐसे मौक़ा पर दो में से एक तरीक़ इख़तेयार करता है या तो दावा वर्णन करने के बाद ही उसके दलायल देता है या दलायल वर्णन कर के बाद में इसका नतीजा पेश करता है और यही दो तिब्बी तरीक़ हैं जिनसे इन्सानी दिमाग़ तसल्ली पाता है और दोनों अपने अपने रंग में निहायत प्रभावी हैं । कई दफ़ा दावा वर्णन कर के बाद में दलायल देना मुफ़ीद होता है और बाअज़ दफ़ा वाक़ियात वर्णन कर के बाद में उनका तिब्बी नतीजा वर्णन करना मुफ़ीद होता है। इस जगह दूसरा तरीक़ इख़तेयार किया है और पहली आयात का अकली नतीजा पेश है।

पहली आयात में दो मज़मून वर्णन हुए हैं। एक तो ये कि सब कायनात एक ही रिश्ता में पिरोई हुई है और एक चीज़ का दूसरी पर ईन्हेसार है। इन्सान की पैदाइश

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो मर्तबा फ़रमाया मुझे नमाज़ पढ़ने वालों के क़तल से मना किया गया है यह आजकल के मुस्लमानों के लिए सबक़ है

इख़लास-ओ-वफ़ा के पैकर कुछ बदरी सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सालेह शकरान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मालिक बिन दुख़शम रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ख़ालिद बिन बुकेर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत के कुछ पहलूओं का वर्णन

महदी आबाद बुर्कीना फासो में 9 अहमदियों की अफ़सोसनाक शहादत, शुहदा की बुलंद ई दर्जात तथा बुर्कीना फासो के हालात के लिए अहबाब-ए-जमाअत को की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 जनवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

शेष भाग

फिर वर्णन है हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो का। उनकी कुनिय्यत अबूज़ैद थी।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، الجزء الثالث، صفحه397 "خارجه بن زيد" دار الكتب العلمية بيروت)

एक रिवायत में है कि हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद बिन मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यहूद के चंद उल्मा से तौरात में मौजूद चंद बातों के विषय में पूछा जिनका उत्तर देने से उन उल्मा ने इंकार कर दिया और सच्च को छुपाया, जिस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَ الْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ

(अल् बकरः : 160) यक़ीनन वे लोग जो उसे छुपाते हैं जो हम ने स्पष्ट निशानात और कामिल हिदायत में से नाज़िल किया है इस के बाद भी कि हमने किताब में इस को लोगों के लिए ख़ूब खोल कर वर्णन कर दिया था। यही हैं वे जिन पर अल्लाह लानत करता है और उस पर सब लानत करने वाले भी लानत करते हैं।

(तफ़सीर तिबरी, भाग 3 पृष्ठ 250 مكتبة ابن تيمية القاهرة)

फिर हज़रत ज़ियाद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन है। उनकी कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह थी। उनका ताल्लुक़ अंसार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू बयाज़ह बिन आमिर से था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की नसल मदीना और बग़दाद में मुक़ीम थी।

(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 448 ज़ियाद बिन लबीद, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

उनके बारे में ज़ह्हाक बिन नुमान वर्णन करते हैं कि मस्रूक़ बिन वायल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास वाद-ए-अक़ीक़ से मदीना आए। (अरब में कई वादियों, कानों और दूसरी जगहों का नाम अक़ीक़ है। सबसे मशहूर वह वाद-ए-अक़ीक़ है जो मदीना के ठीक पश्चिम से गुज़रती है। बहरहाल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में मदीना से मक्का जाने वाली सड़क उसी अक़ीक़ से होती हुई जुल हलीफ़ा पहुँचती थी। लिखने वाले लिखते हैं कि आजकल का रास्ता भी है।) और इस्लाम क़बूल किया और इस्लाम पर उम्दगी से क़ायम रहे। आपने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं चाहता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरी क़ौम में एक ऐसे आदमी को भेजें जो उन्हें इस्लाम की तरफ़ बुलाए। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी तरफ़ हज़रत ज़ियाद बिन लबीद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो को भेजा।

(المعجم الكبير, भाग 20 पृष्ठ 336 हदीस 795، من اسمه مسروق)(مسروق بن وائل الحضرمی، مكتبة ابن تيمية القاهرة उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लाम, भाग 13 पृष्ठ 414 दानिश गाह पंजाब लाहौर 2005 ई.)

हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हो 41 हिज्री में हज़रत माविया के दौर हुकूमत के शुरू में फ़ौत हुए। तिबरानी कहते हैं कि हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हो कूफ़ा में रहे और मुस्लिम और इब्ने हब्बान कहते हैं कि आप शाम में रहे। इब्ने हब्बान कहते हैं कि आप फुक़हा-ए-सहाबा में थे।

(تهذيب التهذيب، جزء1، صفحه652-653، زياد بن لبيد بن ثعلبه، مؤسسة الرسالة بيروت2014ء)

हज़रत ज़ियाद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी चीज़ का वर्णन फ़रमाया और फ़रमाया यह बात इलम उठ जाने के वक़्त होगी। मैंने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! इल्म कैसे चला जाएगा और हम क़ुरआन पढ़ते हैं और अपने बच्चों को पढ़ाते हैं और हमारे बच्चे अपने बच्चों को क़ियामत के दिन तक उसे पढ़ाएँगे। जब क़ुरआन जारी रहेगा तो फिर किस तरह इलम उठ जाएगा। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तेरा भला करे ज़ियाद! मैं तुम्हें मदीना के सबसे ज़्यादा समझदार लोगों में से समझता था। क्या यहूद और नसारा तौरात और इंजील नहीं पढ़ते जो इन दोनों में है लेकिन इस की किसी बात पर अमल नहीं करते। (सुंन इब्ने माजा, كتاب الفتن، باب ذَهَابُ الْقُرْآنِ وَالْعِلْمِ، हदीस 4048) इल्म उस वक़्त उठ जाएगा जब क़ुरआन पढ़ेंगे तो सही लेकिन मुस्लमान अमल नहीं करेंगे और यही कुछ हम आजकल देख रहे हैं।

फिर यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन कुसीत से रिवायत है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो ने इक्रिमा बिन अबुजहल को पाँच सौ मुस्लमानों के साथ हज़रत ज़ियाद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत मुहाजिर बिन अबी उमय की मदद के लिए भेजा। वह लश्कर के पास उस वक़्त पहुंचे जब उन्होंने नुजीर जो कि यमन में है उस को फ़तह कर लिया था। फिर हज़रत ज़ियाद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको माल-ए-ग़नीमत में से हिस्सा दिया। फ़तह के बाद यह क़ाफ़िला पहुंचा था। इमाम शाफ़ी रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस विषय के बारे में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको उत्तर ख़त लिखा कि माल-ए-ग़नीमत पर सिर्फ उसी का हक़ है जो जंग में शरीक हुआ है। और उनके ख़्याल में अक्रमा का कोई हिस्सा नहीं बनता क्योंकि वह इस जंग में शामिल नहीं हुए। हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने साथियों से इस बारे में बात की तो उन्होंने अक्रमा और इस के लश्कर को दिल्ली ख़ुशी से इस माल-ए-ग़नीमत में शामिल कर लिया।

(किताब अल् सुन्न कुबरा, भाग 9 पृष्ठ 86 किताब अल्सैर, बाब الغنيمة لمن شهد الوقعة، दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर वर्णन है हज़रत ख़ालिद बिन बुकेर रज़ियल्लाहु अन्हो का। बुकेर बिन अबद-ए-यालैल उनकी वलदीयत थी। क़बीला बनू साद से हैं जो बनी अदी के साथी थे। (ओसोदुल गाबा, भाग 2 पृष्ठ 194 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इब्न-ए-इसहाक़ ने कहा है कि हमें ईयास और उनके भाईयों आक़िल, ख़ालिद और आमिर के इलावा कोई भी चार ऐसे भाई मालूम नहीं जो ग़ज़व-ए-बदर में शरीक हुए हों। इन चारों भाईयों ने इकट्ठी हिज्रत की और मदीना में रफा बिन अब्दुल मंज़िर के हाँ क़ियाम किया।

(السيرةالنبوية لابن هشام، صفحه592-591، ذكر يوم الرجيع فى سنة ثلاث، دار الكتب العلمية بيروت2001ء)

इब्न-ए-इसहाक़ कहते हैं कि जंग अहद के बाद क़बायल अज़ल और काहेरा के चंद लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम में इस्लाम की रग़बत हो रही है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे साथ अपने अस्हाब में से चंद लोग रवाना फ़रमाएं ताकि वह हमारी क़ौम को दीन की तालीम दें और क़ुरआन पढ़ाऐं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मरसद बिन अबी मरसद रज़ियल्लाहु अन्हो की इमारत में छः सहाबा को उनके साथ भिजवा दिया जिनमें हज़रत ख़ालिद बिन बुकेर रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे। उनको उन लोगों ने बाद में धोखे से शहीद भी कर दिया था जो दीन सीखने के लिए ले के गए थे। (السيرةالنبوية لابن هشام، صفحه592-591، ذكر يوم الرجيع فى سنة ثلاث، دار الكتب العلمية بيروت2001ء)

फिर हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन है। उनकी कुनिय्यत अबू यकजान थी।

(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साद, अलजज़-ए-एलिसा लस, सफ़ा187 ''अम्मार बिन यासर' दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत1990-ए-

उनके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तारीख़ की किताबों से अख़ज़ कर के लिखा है कि "एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु नामी ग़ुलाम के पास से गुज़रे तो देखा कि वह सिसकियाँ ले रहे थे और आँखें पोंछ रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा अम्मार! क्या बात है? अम्मार ने कहा हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ही बुरी। वे मुझे मारते गए "यानी दुश्मन मारते गए" और दुख देते गए और उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक मेरे मुँह से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ और देवताओं की ताईद में कलेमात नहीं निकलवा लिए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा लेकिन तुम अपने दिल में क्या महसूस करते थे? अम्मार ने कहा दिल में तो एक ग़ैर मुतज़लज़ल ईमान महसूस करता था।" जबकि मुँह से मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ कह दिया लेकिन दिल में मेरा ईमान था। "आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर दिल ईमान पर मुतमइन था तो ख़ुदा तआला तुम्हारी कमज़ोरी को माफ़ कर देगा।" (दीबाचा तफ़सीरूल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20 पृष्ठ 195)

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो की हजरत-ए-हब्शा के बारे में इख़्तेलाफ़ है। कुछ का ख़्याल है कि आप हिज्रत हब्शा सानिया में शरीक थे।

(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 3, पृष्ठ 189 अम्मार बिन यासिर "दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में होने वाली शोरिश का वर्णन करते हुए हज़रत ख़लीफ़-ए-सानी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "जब ये शोरिश हद से बढ़ने लगी और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो किराम को भी ऐसे ख़ुतूत मिलने लगे जिनमें गवर्नरों की शिकायात दर्ज होती थीं तो उन्होंने मिलकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया कि क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हो को मालूम नहीं कि बाहर क्या हो रहा है? उन्होंने फ़रमाया कि जो रिपोर्टें मुझे आती हैं वह तो ख़ैर-ओ-आफ़ियत ही ज़ाहिर करती हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया कि हमारे पास इस एस मज़मून के ख़ुतूत बाहर से आते हैं इस की तहक़ीक़ होनी चाहीए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस पर उनसे मश्वरा तलब किया कि तहक़ीक़ किस तरह की जाए और उनके मश्वरा के मुताबिक़ उसामा बिन ज़ैद को बस्रा की तरफ़, मुहम्मद बिन मुस्लिम को कूफ़ा की तरफ़, अब्दुल्लाह बिन उम्र को शाम की तरफ़, अम्मार बिन यासिर को मिस्र की तरफ़ भेजा कि वहां के हालात की तहक़ीक़ कर के रिपोर्ट करें कि आया वाक़्य में उमरा-ए-रईयत पर ज़ुलम करते हैं और ताद्दी से काम लेते हैं और लोगों के हुक़ूक़ मार लेते हैं और उन चारों के इलावा कुछ और लोग भी मुतफ़र्रिक़ बिलाद की तरफ़ भेजे ताकि वहां के हालात से सूचना दें।

(तिबरी, भाग नंबर 6 पृष्ठ 2943 मुद्रित बेरूत)

ये लोग गए और तहक़ीक़ के बाद वापस आकर इन सबने रिपोर्ट की कि सब जगह अमन है और मुस्लमान बिल्कुल आज़ादी से ज़िंदगी बसर कर रहे हैं और उनके हुक़ूक़ को कोई तलफ़ नहीं करता और हुक्काम अदल-ओ--इन्साफ़ से काम ले रहे हैं। मगर अम्मार बिन यासर ने देर की और उनकी कोई ख़बर न आई .. उनकी तरफ़ से ख़बर आने में इस क़दर देर हुई कि अहल-ए-मदीना ने ख़्याल किया कि कहीं मारे गए हैं मगर असल बात यह थी कि वे अपनी सादगी और सियासत से न वाक़फ़ीयत की वजह से उन मुफसिदों के पंजा में फंस गए थे जो अब्दुल्लाह बिन सुबह के शागिर्द थे।

मिस्र में चूँकि ख़ुद अब्दुल्लाह बिन सबह मौजूद था और वह इस बात से ग़ाफ़िल नहीं था कि अगर इस तहक़ीक़ाती वफ़्द ने समस्त मुल्क में अमन-ओ--अमान का फ़ैसला दिया तो समस्त लोग हमारे मुख़ालिफ़ हो जावेंगे। इस वफ़्द के भेजे जाने का फ़ैसला ऐसा अचानक हुआ था कि दूसरे इलाक़ों में वहको ई इंतेज़ाम नहीं कर सका था मगर मिस्र का इंतेज़ाम उस के लिए आसान था। जूंही अम्मार बिन यासर मिस्र में दाख़िल हुए उसने उनका इस्तक़बाल किया और "वालिए मिस्र" अम्र बिन आस "की बुराईयां और मज़ालिम वर्णन करने शुरू किए। वह उसके ज़ुबान के जादू के असर से महफ़ूज़ नहीं रह सके।" ऐसी बातें कीं कि इन पर उस की बातों का जादू चल गया। बड़ा बोलने वाला था''और बजाय उस के कि एक आम बेलौस तहक़ीक़ करते। वाल-ए-मिस्र के पास गए ही नहीं और न आम तहक़ीक़ की बल्कि उसी मुफ़सिद गिरोह के साथ चले गए और उन्ही के साथ मिलकर एतराज़ करने शुरू कर दीए।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से अगर कोई शख़्स इस मुफ़सिद गिरोह के फंदे में फंसा हुआ यक़ीनी तौर पर साबित होता है तो वह सिर्फ़ अम्मार बिन यासर हैं। उनके सिवा कोई मारूफ़ सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो इस हरकत में शामिल नहीं हुआ और अगर किसी की शमूलियत वर्णन की गई है तो दूसरी रिवायात से इस का रद्द भी हो गया है। अम्मार बिन यासिर का उन लोगों के धोखे में आ जाना एक ख़ास वजह से था।" ये नहीं था कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता उनमें मुनाफ़क़त थी बल्कि वजह और थी और वह यह कि जब वे मिस्र पहुंचे तो वहां पहुंचते ही बज़ाहिर शरीफ़ आचरण का नज़र आने वाले और निहायत तेज़ ज़ुबान वाले लोगों की एक जमाअत उनको मिली जिसने निहायत उम्दगी से उनके पास वालई-ए-मिस्र की शिकायात वर्णन करनी शुरू कीं। इत्तेफ़ाक़न वाली मिस्र एक ऐसा शख़्स था जो कभी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सख़्त मुख़ालिफ़ रह चुका था और इस की निसबत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़तह मक्का के वक़्त हुक्म दिया था कि ख़ाह ख़ाना काबा ही में क्यों न मिले उसे क़तल कर दिया जाए और गो बाद आप "सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" ने उसे माफ़ कर दिया मगर उस की पहली मुख़ालफ़त का बाअज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दिल पर जिनमें अम्मार भी शामिल थे असर बाक़ी था। अतः ऐसे शख़्स के ख़िलाफ़ बातें सुनकर अम्मार बहुत जल्द प्रभावित हो गए और उन इल्ज़ामात को जो इस पर लगाए जाते थे सही तस्लीम कर लिया और एहसास तिब्बी से फ़ायदा उठा कर सुबाई यानी अब्दुल्लाह बिन सुबह के साथी उसके ख़िलाफ़ इस बात पर ख़ास ज़ोर देते थे।"

(इस्लाम में इख़्टेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल-उलूम, भाग 4 पृष्ठ 280 से 281, 283 से 284)

उनके साथ ये भी मिल गए लेकिन ये भी लिखा है कि जंग सिफ़्फ़ीन के अवसर पर हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों से मुख़ातब हो कर फ़रमाया था कि अल्लाह तआला की ख़ुशनुदी चाहने वाले और माल और औलाद की तरफ़ लौटने की ख़ाहिश न रखने वाले कहाँ हैं? तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास लोगों की एक जमाअत आ गई। हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन से मुख़ातब हो कर कहा। हे लोगो! हमारे साथ उन लोगों की तरफ़ चलो जो हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ाँ रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़ून का मुतालबा कर रहे हैं और वह समझते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मज़लूम क़तल किए गए हैं। अल्लाह की क़सम वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल का मुतालिबा नहीं कर रहे हैं बल्कि उन लोगों ने दुनिया का मज़ा चख लिया है, यहां अब उनको समझ आ गई थी कि फ़ित्ना वाले कितना फ़ित्ना पैदा कर रहे हैं और फिर कहा कि अब इस से यानी दुनिया से ये लोग मुहब्बत रखते

हैं और इसी के पीछे लग गए हैं। उन्होंने जान लिया है कि हक़ उनके साथ चिमट गया है तो वह हक़ उनके और उनके दुनियावी उमूर के दरमयान हायल हो जाएगा और उन लोगों को इस्लाम में कोई सबक़त हासिल नहीं जिसके बायस ये लोग लोगों की इताअत और इमारत के हक़दार हों। इन लोगों को तो कोई सबक़त हासिल नहीं है कि उनको अमीर बनाया जाए सिर्फ़ फ़ित्ना पैदा कर रहे हैं। इन लोगों ने अपने मुतबईन को यह कह कर धोखा दिया कि हमारे इमाम मज़लूम क़तल कर दीए गए हैं ताकि ये जाबिर बादशाह बन जाएं और यह ऐसी चाल है जिसके ज़रीया वह इस हद तक पहुंच गए हैं जैसा कि तुम देख रहे हो। अगर ये लोग हज़रत उसमान के क़िसास का मुतालिबा ना करते तो लोगों में से दो अफ़राद भी उनकी इत्तिबा नहीं करते।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हे अल्लाह अगर तो हमारी मदद फ़रमाए जैसा कि तो कई मर्तबा मदद फ़र्मा चुका है और अगर तू उनको उनके मक़सद में कामयाब करे तो उन के लिए इस वजह से कि उन्होंने तेरे बंदों में नई बातें पैदा कर दी हैं एक दर्दनाक अज़ाब जमा रख। (तारीख़ तिबरी, भाग 3 पृष्ठ 98 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

मुहम्मद बिन अम्र वग़ैरा से मर्वी है कि जंग सिफ़्फ़ीन में ख़ूब ज़ोरों की जंग हो रही थी और क़रीब था कि दोनों फ़रीक़ फ़ना हो जाएं। मुआवीया ने कहा यह वह दिन है कि जिसमें अरब फ़ना हो जाऐंगे सिवाए इसके कि उन्हें इस ग़ुलाम यानी अम्मार बिन यासर की कमज़ोरी पहुंचे। यानी हज़रत अम्मार शहीद कर दिए जाएं। तीन दिन और रात शदीद जंग रही। तीसरा दिन हुआ तो हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाशिम बिन उत्बा बिन अबी वक़्क़ास से कहा जिनके पास उस रोज़ झंडा था कि मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा हों मुझे साथ ले चलो। हाशिम ने कहा हे अम्मार आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर ख़ुदा की रहमत हो। आप ऐसे आदमी हैं कि जंग आपको हल्का और ख़फ़ीफ़ समझती है। मैं तो झंडा इस उम्मीद पर लेकर चलूँगा कि उसके ज़रीया से में अपनी मुराद को पहुंच जाऊं। अगर मैं कमज़ोरी दिखाऊँगा तो फिर भी मौत से अमन में नहीं हूँ। वह बराबर उनके साथ रहे यहां तक कि उन्होंने सवार किया। अपने साथ सवार कर लिया। फिर हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु अपने लश्कर में खड़े हुए। जुलकला अपने लश्कर के साथ उनके मुक़ाबले पर खड़ा हुआ। इन दोनों ने आपस में जंग की और क़तल हुए। दोनों लश्कर बर्बाद कर दिए गए।

हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु पर (حوِیّ السَّکْسَکِی)हवा अस्-सक्सकी और (غَادِیَہ مُزَنِی) गादिया मुज़नी ने हमला किया और इन दोनों ने आपको शहीद कर दिया।

अबुल गादिया से पूछा गया कि उन्होंने क़तल कैसे किया? तो उस ने कहा कि जब वह अपने लश्कर के साथ हमारे क़रीब हुए और हम उनके क़रीब हुए तो उन्होंने पुकारा कि कोई मुक़ाबला करने वाला है। सकासक यमन के एक क़बीला का नाम है इस में से एक शख़्स निकल कर आया। दोनों ने एक दूसरे पर तलवार चलाई। फिर हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु ने सक्सकी को क़तल कर दिया। फिर उन्होंने पुकारा कि अब कौन मुक़ाबला करना चाहता है? हमीर यमन के एक क़बीला का नाम, इस में से भी एक शख़्स मुक़ाबले के लिए गया। दोनों ने एक दूसरे पर तलवार चलाई। अम्मार ने हमीरा को क़तल कर दिया। हमीरा ने उनको ज़ख़्मी कर दिया था। फिर उन्होंने पुकारा कि और कौन मुक़ाबला करना चाहता है? मैं उनकी तरफ़ निकला। अर्थात कहता है ग़ुलाम और हम दोनों ने एक दूसरे पर तलवार चलाई। उनका हाथ कमज़ोर हो चुका था। मैंने उन पर ख़ूब ज़ोर से दूसरा वार किया जिससे वह गिर पड़े। फिर मैंने उन पर तलवार से ऐसी ज़रब लगाई कि वे ठंडे हो गए। रावी कहते हैं कि जब हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मुस्लमानों में से जो शख़्स हज़रत अम्मार बिन यासिर की शहादत को ग़ैरमामूली ख़्याल नहीं करता और उसे इस से रंज नहीं वह ज़रूर ग़ैर हिदायत याफताह है।

अम्मार पर अल्लाह तआला की रहमत हो जिस दिन वह इस्लाम लाए और अल्लाह अम्मार पर रहम करे जब चार अस्हाब-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन किया जाता था तो यह चौथे होते थे और पाँच के वर्णन में यह पांचवें होते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दीम अस्हाब में से थे। किसी एक या दो को भी इस में शक नहीं था कि अम्मार के लिए बहुत से मौक़ों पर जन्नत वाजिब हुई। अतः अम्मार को जन्नत मुबारक हो और उनके बारे में कहा गया है कि अम्मार हक़ के साथ और हक़ अम्मार के साथ है। अम्मार जहां कहीं भी जाऐंगे हक़ के साथ ही जाऐंगे और अम्मार का क़ातिल आग में है। (अल् तब्क़ातुल कुबरा, जल्द 3 पृष्ठ 197-198 दारुल कुतुब इलमिया बेरूत 1990 ई.)

सईद बिन अब्दुर्राहमन अपने बाप से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स हज़रत अम्र बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आया और कहने लगा कि जुंबी हूँ और मुझे पानी नहीं मिला। तो हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उम्र बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा। क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हो को याद नहीं कि हम यानी मैं और आप एक सफ़र में थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने तो नमाज़ न पढ़ी और मैं तो मिट्टी में जानवरों की तरह लौटा और नमाज़ पढ़ ली। गोया पानी न होने की वजह से तयम्मुम किया। मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उसका वर्णन किया तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुमको सिर्फ इस तरह काफ़ी था और सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों हाथ ज़मीन पर मारे। फिर उन पर फूँका और अपने मुँह और दोनों हाथों का मस्ह किया। (सही बुख़ारी, किताब तयम्मुम, बाब التیمم هل ینفخ فیها, नंबर 338)

अबू वायल कहते हैं कि हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमें ख़ुतबा दिया और मुख़्तसर दिया और बलीग़ कलाम किया। जब वह मेबर से नीचे उतरे तो हमने कहा हे अबू यकजान आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बहुत बलीग़ कलाम किया है लेकिन मुख़्तसर किया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे लंबा क्यों न किया तो उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि आदमी की लंबी नमाज़ और मुख़्तसर ख़ुतबा उसकी अक्लमंदी की निशानी है। अतः नमाज़ लंबी करो और ख़ुतबा मुख़्तसर करो और यक़ीनन बाज़ वर्णन तो जादू हैं। (صحیح مسلم، کتاب الجمعة، باب تخفیف الصلاة والخطبة، حدیث نمبر 2009)

हस्सान बिन बिलाल कहते हैं कि मैंने अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा कि उन्होंने वुज़ू किया तो अपनी दाढ़ी में ख़िलाल किया। यानी उंगलियां दाढ़ी पर फेरें। उन से कहा गया या रावी कहते हैं कि मैंने उनसे कहा क्या आप अपनी दाढ़ी का ख़िलाल कर रहे हैं? तो उन्होंने जवाब दिया कि मैं दाढ़ी का ख़िलाल क्यों न करूँ जबकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दाढ़ी का ख़िलाल करते देखा है। (जामे तिरमिज़ी, अबवाब तहारत, हदीस नंबर : 29)

अम्र बिन ग़ालिब से रिवायत है कि एक शख़्स ने अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बुराई की तो उन्होंने कहा। दूर हट मर्दूद बदतर। क्या तू रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महबूब बीवी को कष्ट पहुंचा रहा है। (जामे तिरमेज़ी, अबवाब मनाकिब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदीस नंबर 3888)

तो ये था कुछ वर्णन। बाक़ी जो रह गए हैं वे इन शा अल्लाह आइन्दा होंगे।

एक अफ़सोसनाक ख़बर भी है। बुर्कीना फासो में हमारे नौ 9 अहमदी परसों शहीद कर दिए गए। बड़ा अफ़सोसनाक वाक़िया है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। और बड़े ज़ालिमाना तरीक़े से उनको शहीद किया गया लेकिन उनके ईमान का इमतेहान भी था और जिस पर वे साबित-क़दम रहे।

यह नहीं कि अंधा धुंद फायरिंग कर के बल्कि हर एक को बुला बुला कर शहीद किया है लेकिन बहरहाल उस की तफ़सीलात कुछ आई हैं, कुछ आ रही हैं। इसलिए मैं इन शा अल्लाह इनका तफ़सीली से वर्णन अगले जुमा मैं करूँगा। अल्लाह तआला उनसे रहम का सुलूक फ़रमाए। इन सब के दर्जात बुलंद करे। दुआ भी करते रहीं। वहां के हालात अभी भी ठीक नहीं। जो दहशतगर्द आए थे वह धमकी दे के गए हैं कि अगर दुबारा मस्जिद खोली तो हम दुबारा आएँगे और हमला करेंगे। अल्लाह तआला वहां के अहमदियों को उनके शर से महफ़ूज़ रखे। बहरहाल तफ़सीली वर्णन इन शा अल्लाह तआला अगले हफ़्ता करूँगा।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

"यह मत ख़्याल करो कि ख़ुदा तुम्हें ज़ाए कर देगा। तुम ख़ुदा के हाथ का एक बीज हो जो ज़मीन में बोया गया
ख़ुदा फ़रमाता है कि यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा और हर एक तरफ़ से उसकी शाख़ें निकलेंगी और एक बड़ा दरख़्त हो जाएगा
अतः मुबारक वह जो ख़ुदा की बात पर ईमान रखे और दरमयान में आने वाले इबतेलाओं से न डरे क्योंकि इबतेलाओं का आना भी ज़रूरी है ताकि ख़ुदा तुम्हारी आज़माइश करेगा" (हज़रत मसीह माहूद अलैहिस्सलाम)

पिछले दिनों बर्र-ए-आज़म अफ़्रीक़ा के मुल्क बुर्कीना फासो में इशक़-ओ-वफ़ा और इख़लास और
ईमान और यक़ीन से पुर अफ़राद-ए-जमात ने जो नमूना मजमूई तौर पर दिखाया है, वह हैरत-अंगेज़ है, अपनी उदाहरण आप हैं

अल्लाह तआला की राह में जान देना न सिर्फ अपने लिए बल्कि जमात की ज़िंदगी का भी बायस बन रहा है
यही तो हैं जो पीछे रहने वालों की ज़िंदगी और प्रगति का भी ज़रीया बन रहे हैं, फिर वे मुर्दा किस तरह हो सकते हैं

11 जनवरी को इशा के वक़्त 9 अहमदी बुज़ुर्गों को मस्जिद के सेहन में बाक़ी नमाज़ियों के सामने
इस्लाम अहमदियत से इंकार न करने के आधार पर एक एक कर के शहीद कर दिया गया, इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

मेरा सिर क़लम करना है तो कर दें लेकिन मैं अहमदियत नहीं छोड़ सकता, जिस सदाक़त को मैंने पालिया है उससे पीछे हटना मुम्किन नहीं, ईमान के मुक़ाबले में जान की हैसियत क्या है

सब अहमदी बुज़ुर्गों ने पहाड़ों जैसी मज़बूती का प्रदर्शन किया और मुज़ाहरा करते हुए
जुर्रत और बहादुरी से शहादत को गले लगाना क़बूल कर लिया किसी एक ने भी ज़रा सी कमज़ोरी न दिखाई और न ही अहमदियत से इंकार किया, एक के बाद एक शहीद गिरता रहा
लेकिन किसी का ईमान कमज़ोर नहीं हुआ, सबने एक दूसरे से बढ़कर यकीन-ए-मुहकम और दिलेरी का मुज़ाहरा किया और ईमान का अल्म बुलंद रखते हुए अल्लाह के हुज़ूर अपनी जानें पेश कर दीं

बुर्कीना फासो में महदी आबाद के तमाशिक के रहने वाले हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करने में सब्क़त ले गए और अब इतनी बड़ी क़ुर्बानी देकर अपना एक ख़ास मुक़ाम भी हासिल कर चुके हैं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहब शहीद की शहादत का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि
"ख़ुदा तआला बहुत से उनके क़ाइम मक़ाम पैदा कर देगा हम गवाह हैं कि आज अफ़्रीक़ा के रहने वालों ने इजतेमाई तौर पर इस का नमूना दिखा दिया और क़ायम मुक़ामी का हक़ कर दिया

बुर्कीना के लोग हक़ीक़तन बड़े अज़ीम लोग हैं और मुझे ख़ुशी है कि ख़ुदा ने उनको अहमदियत के नूर से मुनव्वर किया है
मैंने जो बेदारी जमाअत बुर्कीना के अफ़राद में देखी है वह हैरत-अंगेज़ है

यह अहमदियत के चमकते सितारे हैं, अपने पीछे एक नमूना छोड़ कर गए हैं, अल्लाह तआला उनकी औलादों और नसलों को भी इख़लास-ओ--वफ़ा में बढ़ाए
दुश्मन समझता है कि उनकी शहादतों से वह इस इलाक़े में अहमदियत ख़त्म कर देगा लेकिन इन शा अल्लाह पहले से बढ़कर अहमदियत यहां बढ़ेगी और पन्पेगी

अल्लाह तआला इन शुहदा के मुक़ाम को बुलंद तर फ़रमाता चला जाए, उनकी क़ुर्बानियों को वह फल फूल लगाए जिसके नतीजा में हम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की
हक़ीक़ी तालीम को जल्द अज़ जल्द दुनिया में फैलता हुआ देखने वाले हों, जहालत दुनिया से ख़त्म हो और ख़ुदा ए वाहिद की हक़ीक़ी बादशाहत दुनिया में क़ायम हो जाए

बुर्कीना फासो के नौ (9) अहमदी शुहदा तथा डाक्टर करीम उल्लाह ज़ीरवी साहिब और उनकी पत्नी श्रीमती अमतुल लतीफ़ साहिबा आफ़ अमरीका का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 जनवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ○ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ○ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ○

(अल् बकरः :155-157)

और जो अल्लाह की राह में क़तल किए जाएं उनको मुर्दे न कहो बल्कि वह तो ज़िंदा हैं लेकिन तुम शऊर नहीं रखते। और हम ज़रूर तुम्हें कुछ

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

ख़ौफ़ और कुछ भूख और कुछ अम्वाल और जानों और फलों के नुक़्सान के ज़रीया आज़माऐंगे और सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दे। इन लोगों को जिन पर जब कोई मुसीबत आती है तो वे कहते हैं कि हम यक़ीनन अल्लाह ही के हैं और हम यक़ीनन उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं।

अल्लाह तआला की राह में जान का नज़राना पेश करने वालों के बारे में यह अल्लाह तआला का फ़रमान है कि वो मुर्दा नहीं बल्कि ज़िंदा हैं। जमाअत-ए-अहमदिया में गुज़शता सौ साल से ज़ायद अरसा से अल्लाह तआला की राह में जान की क़ुर्बानियां पेश की जा रही हैं। क्या उनकी क़ुर्बानियां व्यर्थ गईं? नहीं बल्कि जहां अल्लाह तआला इन शोहदा के मुक़ाम को अपने वाअदे के मुताबिक़ बुलंद करता रहा वहां जमाअत को पहले से बढ़कर प्रगति से भी नवाज़ता रहा। इन शहीदों ने जहां अगले जहान में वह मुक़ाम पाया जो इंही का हिस्सा है और उनके दर्जात हमेशा बढ़ते चले जाने वाले हैं वहां इस दुनिया में भी हमेशा के लिए उनके नाम रोशन हुए हैं और उनका अल्लाह तआला की राह में जान देना न सिर्फ अपने लिए बल्कि जमाअत की ज़िंदगी का भी बायस बन रहा है। यही तो हैं जो पीछे रहने वालों की ज़िंदगी और प्रगति का भी ज़रीया बन रहे हैं। फिर वे मुर्दा किस तरह हो सकते हैं यह जान की क़ुर्बानी जो हज़रत साहिबज़ादा सय्यद अब्दुल लतीफ़ शहीद की क़ुर्बानी से शुरू हुई जमात अहमदिया में उमूमन अफ़ग़ानिस्तान और बर्र-ए-सग़ीर के अहमदियों के हिस्सा में रही। अफ़्रीक़ा में भी एक मुख़लिस अहमदी ने कांगो में अपनी जान का नज़राना 2005 ई. में विशेषता जमात की ख़ातिर पेश किया था लेकिन पिछले दिनों बर्र-ए-आज़म अफ़्रीक़ा के मुल्क बुर्कीना फासो में इशक़-ओ-वफ़ा और इख़लास और ईमान और यक़ीन से पुर अफ़राद-ए-जमात ने जो नमूना मजमूई तौर पर दिखाया है वह हैरत-अंगेज़ है, अपनी मिसाल आप है।

जिनको अवसर दिया गया कि मसीह माहूद अलैहिस्सलाम की सदाक़त का इंकार करो और इस बात को तस्लीम करो कि ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर ज़िंदा हैं और आसमान से उतरेंगे तो हम तुम्हारी जान बख़शी कर देते हैं। लेकिन इन ईमान और यक़ीन से पुर लोगों ने जिनका ईमान पहाड़ों से ज़्यादा मज़बूत नज़र आता है जवाब दिया कि जान तो एक दिन जानी है, आज नहीं तो कल, उसके बचाने के लिए हम अपने ईमान का सौदा नहीं कर सकते। जिस सच्चाई को हमने देख लिया है उसे हम छोड़ नहीं सकते और यूं एक के बाद दूसरा अपनी जान क़ुर्बान करता गया।

उनकी औरतें और बच्चे भी ये नज़ारा देख रहे थे और कोई वावेला किसी ने नहीं किया।

अतः ये वे लोग हैं जिन्हों ने अफ़्रीक़ा में बल्कि दुनियाए अहमदियत में अपनी क़ुर्बानियों की एक नई तारीख़ रक़म की है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में हज़रत साहिबज़ादा साहिब की जो क़ुर्बानी थी उसके बाद यह अपनी दुनियावी ज़िंदगियों की क़ुर्बानी देकर हमेशा की ज़िंदगी हासिल करने वाले बन गए जिन्हों ने जान, माल, वक़्त को क़ुर्बान करने का जब अह्द किया तो फिर निभाया और ऐसा निभाया कि बाद में आकर पहले आने वालों से सबक़त ले गए। अल्लाह तआला उन में से हर एक को इन बशारतों का वारिस बनाए जो अल्लाह तआला ने उस की राह में क़ुर्बानियां करने वालों को हैं।

अब मुख़्तसेरन इन शुहदा के हालात-ए-ज़िंदगी वर्णन करूँगा जिनसे उनके ईमान की पुख़्तगी का पता चलता है। तफ़सीलात के मुताबिक़ बुर्कीना फासो का शहर डोरी है वहां महदी आबाद जमात है जहां नई आबादी थी वहां 11 जनवरी को इशा के वक़्त 9 अहमदी बुज़ुर्गों को मस्जिद के सेहन में बाक़ी नमाज़ियों के सामने इस्लाम अहमदियत से इंकार न करने की बिना पर एक एक कर के शहीद कर दिया गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

रिपोर्ट के मुताबिक़ इशा के वक़्त चार मोटर साईकलों पर आठ हथयार सहित अफ़राद मस्जिद में आए। ये हथयारों वाले अफ़राद अहमदिया मस्जिद में आने से पहले क़रीब वाक़्य मस्जिद, जो वहाबियों की मस्जिद है वहां मौजूद थे जहां उन्होंने मग़रिब से इशा तक का वक़्त गुज़ारा है लेकिन वहां किसी को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाया क्योंकि आए सिर्फ़ अहमदियों के लिए थे। जब ये दहशतगर्द अहमदिया मस्जिद में आए तो उस वक़्त मस्जिद में इशा की अज़ान हो रही थी। उस वक़्त तक कुछ नमाज़ी भी आ चुके थे और बाक़ी भी आ रहे थे। अज़ान ख़त्म होने के बाद दहशतगरदों ने मुअज़्ज़न से ऐलान करवाया कि अहबाब जल्दी मस्जिद में आ जाएं कुछ लोग आए हैं उन्होंने बात करनी है। जब ये लोग जमा हो गए तो फिर दहशतगरदों ने पूछा भी कि यहां इमाम मस्जिद कौन है?

अल्हाज इबराहीम बदीगा (Bidiga) साहिब ने बताया कि वह इमाम मस्जिद हैं। फिर उन्होंने यह पूछा कि नायब इमाम कौन है? तो आग उमर आग अब्दुर्रहमान साहिब ने बताया कि वह नायब इमाम हैं। जब नमाज़ का वक़्त हो गया तो इमाम इबराहीम साहिब ने दहशतगरदों से कहा कि हमें नमाज़ पढ़ लेने दें लेकिन उन्होंने नमाज़ पढ़ने की इजाज़त नहीं दी।

हथयारबंद अफ़राद ने इमाम से जमाअत-ए-अहमदिया के अक़ायद के विषय में काफ़ी सवालात किए जिनके जवाबात इमाम साहिब ने तसल्ली और बहादुरी से दिए। इमाम साहिब ने बताया कि हम लोग मुस्लमान हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानने वाले हैं।

उन्होंने पूछा कि आप लोगों का ताल्लुक़ किस फ़िरक़े से है? इमाम साहिब ने बताया कि हमारा ताल्लुक़ अहमदिया मुस्लिम जमाअत से है। फिर दहशतगरदों ने पूछा कि क्या आपके अक़ीदा के मुताबिक़ हज़रत-ए-ईसा ज़िंदा हैं या फ़ौत हो गए हैं? इमाम साहिब ने कहा कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं। बहरहाल इस पर दहशतगरदों ने कहा कि नहीं। ईसा ज़िंदा आसमान पर मौजूद हैं और वापस आकर दज्जाल को क़तल करेंगे और मुस्लमानों के मसायल हल करेंगे। (इसी उम्मीद पर ये बैठे हैं) फिर उन्होंने पूछा कि इमाम महदी कौन है? इमाम साहिब ने कहा कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम इमाम महदी और मसीह मौऊद के तौर पर आए हैं। ये बातें सुनके आख़िर पर हथयारबंद अफ़राद ने कहा कि अहमदी मुस्लमान नहीं बल्कि पक्के काफिर हैं।

इसके बाद वे लोग इमाम साहिब को मस्जिद के साथ मुल्हिक़ अहमदिया सिलाई सैंटर में ले गए जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खलिफ़ा की तसावीर लगी हुई थीं। वे तसावीर लेकर इमाम साहिब के साथ वापस मस्जिद में आगए और फिर इन तसावीर के हवाले से इमाम इबराहीम से सवालात किए। इमाम साहिब ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खुलफ़ा के नाम बताए और एक एक तस्वीर का परिचय करवाया और कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बतौर इमाम महदी और मसीह मौऊद के आए हैं। इस पर उन्होंने कहा कि नऊज़ो-बिल्लाह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का नबुव्वत का दावा झूठा है। फिर दहशतगरदों ने मस्जिद में मौजूद नमाज़ियों में से बच्चों, नौजवानों और बुज़ुर्गों के अलग अलग ग्रुप बनाए। उस वक़्त मस्जिद में बच्चों और नौजवानों, बुज़ुर्गों और ख़वातीन समेत साठ से सत्तर अफ़राद मौजूद थे। पर्दे की दूसरी तरफ़ दस से बारां लजना उस वक़्त नमाज़ के लिए मौजूद थीं। उम्र के लिहाज़ से ग्रुपस बनाने के बाद दहशतगरदों ने बड़ी उम्र के अफ़राद से कहा कि वे मस्जिद के सेहन में आ जाएं। उस वक़्त कुल दस अंसार मस्जिद में मौजूद थे जिनमें से एक माज़ूर भी थे। जब वह माज़ूर दोस्त भी बाक़ी अंसार भाईयों के साथ खड़े हो कर बाहर जाने लगे तो उन्होंने यह कह कर बिठा दिया कि तुम किसी काम के नहीं, बैठे रहो। नौ (9)को वे ले के सेहन में आगए। मस्जिद के सेहन में खड़ा कर के इमाम इबराहीम बदीगा साहिब से कहा कि अगर वह अहमदियत से इंकार कर दें तो उन्हें छोड़ दिया जाएगा। इमाम साहिब ने जवाब दिया कि मेरा सिर क़लम करना है तो कर दें लेकिन मैं अहमदियत नहीं छोड़ सकता। जिस सदाक़त को मैंने पा लिया है इस से पीछे हटना मुम्किन नहीं। ईमान के मुक़ाबले में जान की हैसियत किया है।

दहशतगरदों ने इमाम साहिब की गर्दन पर बड़ा चाक़ू रखा और उनको लिटा कर ज़बह करना चाहा लेकिन इमाम साहिब ने मुज़ाहमत की और कहा कि मैं लेट कर मरने की निसबत खड़े रहते हुए जान देना पसंद करूँगा। इस पर उन्होंने इमाम साहिब को गोलीयां मार कर शहीद कर दिया।

सबसे पहली शहादत इमाम अल्हाज इबराहीम बदीगा साहिब की हुई।

इमाम साहिब को बेदर्दी के साथ शहीद करने के बाद दहशतगरदों ने ख़्याल किया कि बाक़ी लोग ख़ौफ़ज़दा हो कर अपने ईमान से फिर जाऐंगे। इसलिए उन्होंने अगले अहमदी बुज़ुर्ग से कहा कि अहमदियत से इंकार करना है या तुम्हारा भी वही हाल करें जो तुम्हारे इमाम का किया है।

इस बुज़ुर्ग ने बड़ी दिलेरी से और बहादुरी से कहा कि अहमदियत से इंकार मुम्किन नहीं। जिस राह पर चल कर हमारे इमाम ने जान दी है हम भी उसी राह पर चलेंगे। इस पर उन्हें भी सिर में गोलियां मार कर शहीद कर दिया गया।

पीछे रह जाने वाले अफ़राद से भी फ़र्दन फ़र्दन यही मांग की गई कि इमाम महदी का इंकार कर दें और अहमदियत छोड़ दें तो उन्हें कुछ नहीं कहा जाएगा और ज़िंदा छोड़ दिया जाएगा।

लेकिन सब अहमदी बुज़ुर्गों ने पहाड़ों जैसी मज़बूती का मुज़ाहरा किया और मुज़ाहरा करते हुए जुर्रत और बहादुरी से शहादत को गले लगाना क़बूल कर लिया। किसी एक ने भी ज़रा सी कमज़ोरी न दिखाई और न ही अहमदियत से इंकार किया। एक के बाद एक शहीद गिरता रहा लेकिन किसी का ईमान मुतज़लज़ल नहीं हुआ। सबने एक दूसरे से बढ़कर यकीन--ए-मुहकम और दिलेरी का मुज़ाहरा किया और ईमान का अल्म बुलंद रखते हुए अल्लाह के हुज़ूर अपनी जानें पेश कर दीं।

हर शहीद को कम-ओ-बेश तीन गोलीयां मारी गईं। इन नौ शुहदा में दो जुड़वां भाई भी शामिल थे। जब आठ अफ़राद को शहीद किया जा चुका तो आख़िर पर आग अमराग अब्दुर्रहमान साहिब जिनकी उमर चवालीस साल थी वह रह गए। उम्र के लिहाज़ से सब शुहदा से छोटे थे। दहश्तगर-दों ने उनसे पूछा कि तुम जवान हो। अहमदियत से इंकार कर के अपनी जान बचा सकते हो तो उन्होंने बड़ी शुजाअत से जवाब दिया कि जिस राह पर चल कर मेरे बुज़ुर्गों ने क़ुर्बानी दी है जो हक़ की राह है मैं भी अपने इमाम और बुज़ुर्गों के नक़श-ए-क़दम पर चल कर ईमान की ख़ातिर अपनी जान क़ुर्बान करने के लिए तैयार हूँ। इस पर उन्हें भी बड़ी बेदर्दी से शहीद कर गया।

हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तज़करः तुस-शाहादतेन में एक स्वप्न का वर्णन फ़रमाते हुए लिखा कि "ख़ुदा तआला बहुत से उनके क़ायम मक़ाम पैदा कर देगा।"

(तज़करः तुस-शाहादतेन, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ : 76)

आप अपनी रईआ से यह नतीजा अख़ज़ किया कि मुझे उम्मीद है कि साहिबज़ादा साहिब की शहादत के बाद अल्लाह तआला बहुत से उनके क़ायम मक़ाम पैदा कर देगा।

हम गवाह हैं कि आज अफ़्रीक़ा के रहने वालों ने इजतेमाई तौर पर इस का नमूना दिखा दिया और क़ायम मुक़ामी का हक़ अदा कर दिया

दहश्तगरदों के मस्जिद में आने से लेकर सवाल-ओ-जवाब करने, अक़ायद पर तफ़सीली बेहस करने और सारी कार्रवाई कर के मस्जिद से निकलने तक कम-ओ-बेश डेढ़ घंटे का वक़्त बनता है। इस दौरान में बच्चे और बाक़ी अफ़राद जिस करब और तकलीफ़ से गुज़रे होंगे उस का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। उनके सामने उनके बुज़ुर्गों को शहीद किया जा रहा था। मस्जिद से निकल कर दहश्तगर्द फ़ौरी तौर पर फ़रार नहीं हुए बल्कि काफ़ी देर महदी आबाद में ही रहे और हथयारबंद अफ़राद ने मस्जिद में मौजूद लोगों को यह धमकी भी दी कि बेहतर होगा कि तुम सब अहमदियत छोड़ दो। हम दुबारा आएँगे। अगर तुम लोगों ने अहमदियत तर्क नहीं की या किसी ने दुबारा मस्जिद खोलने की कोशिश की तो तुम सबको ख़त्म कर दिया जाएगा।

इस महदी आबाद की जमात का आग़ाज़ कब हुआ। इस का परिचय क्या है?

इस बारे में ये लिखते हैं। 1998 ई. के आख़िर पर यहां बाक़ायदा मिशन शुरू किया गया था। जमात ने तेज़ी से तरक़्क़ी की। 1999 ई. में एक गांव तकने वेल (Tickneville) की भारी अक्सरीयत अहमदी हो गई और एक मुख़लिस जमात उस जगह क़ायम हो गई। इस गांव के इमाम अल्हाज इबराहीम बदीगा अहमदियत क़बूल करने से पहले इस इलाक़े के सबसे बड़े वहाबी इमाम थे। आपने बहुत तहक़ीक़ के बाद बैअत की थी। बैअत करने के बाद एक पुरजोश दाई, एक निडर मुबलि्लग और बहादुर सिपाही के तौर पर सामने आए। उन्होंने यह भी कहा मैंने पहले वर्णन नहीं किया कि जब उन्होंने बैअत की है तो उनके साथियों ने, बाअज़ उल्मा ने उनको कहा कि तुम क्यों मानने लगे हो? उन्होंने कहा जब सोना (सदाक़त) मैंने देख लिया और अल्लाह तआला ने इस का हुक्म भी दिया हुआ है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहादीस भी पूरी हो रही हैं, बातें भी पूरी हो रही हैं, क़ुरआन-ए-करीम इसकी गवाही देता है तो किस तरह हो सकता है कि अब में इस का इंकार कर दूं और वंचित रहूं।

बहरहाल इमाम साहिब एक बहुत साहिब-ए-इल्म आदमी थे। इस गांव के तमाम लोग तमशिक क़बीला से ताल्लुक़ रखते हैं और तमशिक ज़बान बोलते हैं। तमशिक लोगों की संख्या दो लाख के क़रीब बताई जाती है। ये बुर्कीना फासो, नाईजर, माली और अल्जीरिया में पाए जाते हैं। 99.9 फ़ीसद मुस्लमान हैं। ज़्यादा-तर मुतशद्दिद वहाबी अक़ायद रखते हैं। तमशिक लोगों में अहमदी होने वाले ज़्यादा नहीं हैं ताहम बुर्कीना फासो में महदी आबाद के तमशिक बाशिंदे हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम की बैअत करने में सबक़त ले गए और अब इतनी बड़ी क़ुर्बानी देकर अपना एक ख़ास मुक़ाम भी हासिल कर चुके हैं।

2004 ई. में इस इलाक़े में सोने के बहुत से ज़ख़ायर दरयाफ़त हुए तो माइनिंग कंपनी ने इस गांव की आबादी को क़रीब ही एक नई जगह पर मकानात बना कर दिए और कहा कि वहां मुंतक़िल हो जाएं। इन मुंतक़िल होने वालों की भारी अक्सरीयत अहमदियों की थी, चंद एक घराने दूसरे थे। नया गांव बना था जो तक़रीबन अहमदियों का ही गांव था। इबराहीम साहिब ने यह तजवीज़ दी कि इस गांव का नाम वह पुराना नहीं रखना। इसलिए उन्होंने मुझे लिखा कि इस गांव का कोई नाम रखें और फिर उस का नाम महदी आबाद रखा और 2008 ई. में यहां IAAAE के तहत मॉडल विलेज भी बनाया गया। पानी, बिजली की सहूलतें मुहय्या की गईं। ये बुर्कीना फासो बल्कि दुनिया-भर में पहला मॉडल विलेज प्राजैक्ट था। इसके तहत गांव में बिजली, पानी, सुलाई स्कूल वग़ैरा की सहूलयात दी गईं।

उनकी तदफ़ीन के बारे में उन्होंने अपनी रिपोर्ट में यह लिखा है कि दह-श्तगरदों ने मस्जिद में डेढ़ घंटा गुज़ार कर इस क़दर ख़ौफ़ की फ़िज़ा पैदा की थी कि जिस मुक़ाम पर शहादतें हुईं शुहदा की लाशें रात-भर उसी जगह पड़ी रहीं क्योंकि ख़दशा था कि दहश्तगर्द गांव से बाहर नहीं गए और अगर कोई लाश उठाने गया तो उसे भी मार दिया जाएगा। क़रीब ही आर्मी कैंप था, इस वाक़िया की सूचना उनको दी गई लेकिन वहां से भी कोई नहीं आया न ही सैक्योरिटी इदारों का कोई फ़र्द सुबह तक पहुंचा। फिर शुहदा की तदफ़ीन 12 जनवरी को सुबह दस बजे महदी आबाद में करदी गई।

अब हर एक का मुख़्तसर परिचय वर्णन कर देता हूँ।

अल्हाज इबराहीम बदीगा साहिब जो इमाम हैं, जिनका वर्णन पहले हो चुका है। शहादत के वक़्त उनकी उम्र उठासठ 68) साल थी। तालीम के सिलसिले में सऊदी अरब में भी मुक़ीम रहे। तमाशिक भाषा के बहुत बड़े आलिम थे और इस ज़बान में क़ुरआन-ए-मजीद के मुफ़स्सिर भी थे। आपने 1999 ई. में बैअत की। क़बूल-ए-अहमदियत से क़बल इमाम इबराहीम बदीगा साहिब कई दिहात के चीफ़ इमाम थे। इस ज़ोन के दीगर उल्मा आपके पास आकर बैठने और इकतेसाब-ए-इलम करने को अपनी शान समझते थे इसलिए हर साल कम अज़ कम एक दफ़ा इलाक़े भर के उल्मा, मोअलेमीन और अइम्मा आपके पास आकर क़ियाम करते और फ़ैज़ पाते। ये संख्या पाँच सौ तक भी चली जाती और क़ियाम एक हफ़्ता तक होता। कहा जा सकता है कि इलाक़े के उल्मा और अइम्मा की सालाना मीटिंग आपके पास हुआ करती थी। उनके शागिर्द वर्णन करते हैं कि इन दिनों में भी इमाम साहिब अक्सर यह कहा करते थे कि अभी सदाक़त ज़ाहिर नहीं हुई क्योंकि हक़ और सदाक़त को मानने वाले थोड़े होते हैं। जिस तरह सैंकड़ों की संख्या में ये अइम्मा मेरे पास आकर बैठते हैं और बज़ाहिर एक दूसरे को मुस्लमान ख़्याल करते हैं लेकिन जब सदाक़त ज़ाहिर होगी तो उस वक़्त मानने वाले थोड़े रह जाऐंगे। ये लोग मेरे पास से भी उठकर चले जाऐंगे।

नेकी थी, तक़्वा था, इलम था इसलिए ज़माने के हालात के मुताबिक़ अंदाज़ा लगा लिया कि सदाक़त ने ज़ाहिर होना है और इसके बाद जो हमेशा से नबियों के मुख़ालेफ़ीन का दस्तूर रहा है ये लोग भी मुख़ालेफ़त करेंगे।

बहरहाल जो उन्होंने दिल में माना हुआ था कि जब भी हक़ पहुंचा मैंने मानना है। 1998 ई. में डोरी में बाक़ायदा अहमदिया मिशन क़ायम हुआ तो इमाम इबराहीम साहिब तक भी अहमदियत के पैग़ाम पुहचा। तब्लीग़ी मुहिम के दौरान एक मार्कीट में अल्हाज बदीगा साहिब ने अहमदियत का नाम पहली बार सुना था। उन्हें पता चला कि अहमदी वफ़ात मसीह के क़ायल हैं और मसीह और महदी के आने की ख़बर देते हैं तो इबराहीम बदीगा साहिब सात अफ़राद का एक वफ़द लेकर तलाश-ए-हक़ के लिए डोरी मिशन हाऊस तशरीफ़ लाए। बहुत तहक़ीक़ के बाद आपने अहमदियत क़बूल की थी। अपने ज़ोन में पहला अहमदी होने का सौभाग्य पाया।

ये जो मुख़ालेफ़ीन कहते हैं नाँ कि ग़रीब लोग हैं उनको लालच देकर बैअत करवा लेते हैं। उनको दीन का कुछ पता नहीं है। इन शहीदों ने उनके मुँह-बंद कर दिए हैं। समझ कर सदाक़त को क़बूल किया और फिर क़ुर्बानी की भी आला तरीन मिसाल क़ायम की।

बहरहाल इबराहीम साहिब के बारे में मज़ीद लिखा है पहले भी वर्णन हो चुका है कि जमात के एक निडर सिपाही थे। बे-ख़ौफ़ प्रचारक थे और हक़ीक़ी अर्थों में एक फ़िदाई अहमदी थे। आपकी तब्लीग़ी कोशिशों से इलाक़े भर में अहमदियत का पैग़ाम फैल गया। कई जमातें क़ायम हुईं। आप बढ़ चढ़ कर जमाती प्रोग्रामों में हिस्सा लेते। क़बूल-ए-अहमदियत से क़बल उनके अक़ाइद के मुताबिक़ वहाबियों के इलावा बाक़ी सब फ़िरक़े काफ़िर थे। टीवी देखना, फ़ुटबॉल खेलना या देखना, स्कूल जाना, तस्वीरें बनाना ये सब चीज़ें उनके नज़दीक हराम थीं जैसा वहाबियों का अक़ीदा है लेकिन फिर जब उन्होंने अहमदियत क़बूल कर ली तो फिर इन फ़र्सूदा ख़्यालात से उन्होंने अपने आपको अलैहदा कर लिया और लोगों को भी समझाया कि हक़ीक़त किया है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे के ज़माने सन 2000 ई. में उन्हें यहां यूके में जलसा में भी शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली।

तब्लीग़ का उनको जुनून था।

क़बूल-ए-अहमदियत से क़बल भी साहिब असर-ओ-रसूख़ और कई गांव के चीफ़ इमाम थे जैसा कि वर्णन हुआहै। क़बूल-ए-अहमदियत के बाद आपने अपने आपको तब्लीग़ के लिए वक़्फ़ कर दिया। यूं मालूम होता था कि उन्हें किसी और चीज़ की पर्वा ही नहीं है। उन्होंने तब्लीग़ के वट्सअप ग्रुप बना रखे थे जिसमें खासतौर पर तमाशीक लोगों के लिए एक ग्रुप था। इस ग्रुप में माली, नाईजर, घाना, सऊदी अरब, लीबिया, तीवनस, ऐवरी कोस्ट वग़ैरा देशों से लोग शामिल होते थे। आप मुसलसल उनको तब्लीग़ करते। दिन रात आडीयो पैग़ामात रिकार्ड कर के भिजवाते रहते। दिन हो कि रात इसी काम में व्यस्त रहते। जवाब में बहरहाल मुख़ालेफ़त होती थी। मुख़ालेफ़ीन आपको गालियों के पैग़ाम भी भेजते। वे उनको क़तल की धमकियां भी देते थे लेकिन आप कभी किसी से ग़ुस्सा से बात नहीं करते थे बल्कि क़तल की धमकियां देने वालों को आप कहा करते थे कि मैं तुम्हें किराया भेज देता हूँ आओ और मुझे क़तल करो। जब हालात ख़राब हुए हैं तो आप मुबल्लग़ीन को भी और मोअल्लेमीन को भी कहा करते थे कि तब्लीग़ करनी चाहिए। यह बहाना है कि हालात ख़राब हैं इसलिए हम तब्लीग़ी दौरे पर नहीं जा सकते। कहते हैं मीडीया के ज़रीया तब्लीग़ करें और अगर किसी के पास फ़ोन में नैट पैकेज करने के लिए रक़म नहीं है तो मुझसे ले-ले। सोशल मीडीया ग्रुप बनाए और घर बैठ कर तब्लीग़ के जिहाद में हिस्सा लें। उनको एक जुनून था एक प्रेम था।

नासिर सिद्धू साहिब यहां मुरब्बी रहे हैं। कहते हैं कि 1997 ई. में बुर्कीना फासो आया। ख़लीफ़तुल मसीह राबे राहमहुल्ला ने दावत इलल्लाह का काम सपुर्द किया। तो कहते हैं कि मुझे ज़बान नहीं आती थी इसलिए तीन माह का अरसा लग गया प्लैनिंग करने में। इसके बाद देहातों का दौरा किया। उनके इस गांव के इमाम के पास भी गया। उनको जब वफ़ात-ए-मसीह की और मसीह और महदी की आमद की ख़बर पहुंची तो कहते हैं कि इबराहीम बदीगा साहिब सात अफ़राद के साथ हमारे मिशन हाऊस डोरी आ गए। वहां सवाल-ओ--जवाब हुए। कहते हैं तीन दिन ये मेरे पास रहे हैं। न ये तीन दिन ख़ुद सोए न मुझे सोने दिया। इस के बाद ये लोग चले गए। रोज़ाना सुबह से लेकर शाम तक गुफ़्तगु होती थी। अगले हफ़्ते दुबारा आए और अपने नए इमाम लेकर आए और तहक़ीक़ का यह सिलसिला तीन माह तक जारी रहा। उनके पास अक्सर सवालात के जवाबात तो आ चुके थे लेकिन अहमदियत में दाख़िल होने का कभी उन्होंने ख़्याल ज़ाहिर नहीं किया था। बहरहाल कहते हैं मैं ख़लीफ़तुल मसीह राबे राहमहुल्ला को दुआ के लिए लिखता रहा। एक दिन इमाम साहिब आए और बैअत का फ़ार्म भरा और कहते हैं कि उनसे मैंने कहा कि बाक़ी भी जो मुतवातिर आते रहे हैं वे कहाँ हैं? वे कब क़बूल करेंगे? तो उन्होंने कहा वे सब क़बूल करेंगे मगर सबसे पहले मैं अहमदियत में दाख़िल होना चाहता था इसलिए मैं आ गया हूँ।

ख़िलाफ़त से भी उनको बे-इंतेहा वफ़ा का ताल्लुक़ था।

अमीर जमात बुर्कीना फासो लिखते हैं कि पैंतालीस के क़रीब गांव उनके ज़ेर-ए-असर थे। उन्होंने हज किए। वहां रह कर तालीम हासिल की। बहुत अच्छी अरबी जानते और बोलते थे और इस पूरे इलाक़े में बहुत तब्लीग़ की। साईकल पर गांव जाते और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस इलाक़े में बहुत लोगों को अहमदियत के नूर से मुनव्वर किया। उनके ज़रीया इस इलाक़े के बड़े बड़े उल्मा अहमदियत में दाख़िल हुए और इलाक़े की अक्सर जमाअतें उनकी तब्लीग़ की वजह से क़ायम हुईं और कहते हैं जब भी लंदन आना होता तो हमेशा ये पूछते कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का क्या हाल है? बड़ा मुहब्बत का इज़हार किया करते थे।

कहते हैं इस मुहब्बत की एक मिसाल यही है कि एम. टी. ए. पर जो मेरी बच्चों के साथ क्लास होती थी वह उर्दू ज़बान से बिल्कुल न वाक़फ़ीयत के बावजूद बड़े इन्हिमाक से देखते रहते थे जिस तरह समझ आ रही होती है और सिर्फ यही कहते थे कि मेरे लिए इस मजलिस में यहां बैठना उसको देखना ही बहुत ईमान का और इस में तरक़्क़ी का बाइस बनता है।

मेहमान नवाज़ और ख़ामोश स्वभाव वाले थे लेकिन जब जमात की ख़ातिर बोलना पड़ता था तो फिर बहुत जज़बाती हो के बोलते थे

एक मुकम्मल मुबल्लिग थे। ग़ैर अहमदियों से उन्होंने इन्फ़िरादी और इज-तेमाई तौर पर काफ़ी मुनाज़रे और सवाल जवाब किए

फिर वहां के एक और मुरब्बी मुहिबुल्लाह साहिब हैं वह कहते हैं कि इन बुज़ुर्गान को ज़ाती तौर पर जानता था क्योंकि वहां में अक्सर जाता रहता था। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा प्यार करने वाले, मेहमान नवाज़, वफ़ादार लोग थे। कहते हैं जब सारे जवान सारा दिन काम पर होते थे तो ये बुज़ुर्गान मस्जिद के सामने बने हुए छप्पर पर बैठ कर एम. टी. ए. देखते रहते थे। कहते हैं कि जब उन की शहादत हुई है तो उस के फ़ौरन बाद मुझे एक नौजवान का फ़ोन आया कि इस तरह हमारे बुज़ुर्गों को शहीद कर दिया गया है। उनसे कहा गया अगर आप अहमदियत से पीछे हट जाएं तो हम आपको छोड़ देंगे मगर उन्होंने शहादत को तर्जीह दी। इस नौजवान का कहना था कि अगर ये लोग हम सबको शहीद कर दें तो भी हम अहमदियत से पीछे हटने वाले नहीं हैं ये तो नौ (नू) अंसार थे, इस नौजवान ने कहा ये तो सिर्फ नो 9 अंसार थे अगर हम सब ख़ुद्दाम लजना इत्यादि को भी शहीद कर दें तो भी हम अहमदियत नहीं छोड़ेंगे इन शा अल्लाह। यह रूह है इन मु ख़लेसीन में, इस जमात में जो उन्होंने पैदा की। जब बड़ों की तर्बीयत हो, उनका नमूना हो तो तभी नौजवानों और औरतों में ये जज़बा और ईमान पैदा होता है।

लोकल मुबल्लिग माईगा तेजान साहिब हैं। कहते हैं कि इमाम इबराहीम साहिब को क़तल की धमकियां दी जा रही थीं। शहादत से कुछ दिन पहले उन्होंने मुझसे वर्णन किया कि मुझे क़तल की धमकियां दी जा रही हैं। ये लोग मुझे मार देंगे। हुस्न-ए-ख़लक़ के बारे में ये कहते हैं कि अपनी फ़ैमिली और रिश्तेदारों के साथ बहुत हुस्न-ए-सुलूक से पेश आते। सबसे हमदर्दी करना आपकी आदत थी। दूसरों की ख़ातिर क़ुर्बानी करना और जज़्बा-ए-ईसार दिखाना नुमायां थे।

इलाक़े के बहुत मुअज़्ज़िज़ फ़र्द थे। लोग आपकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

इबराहीम साहिब कोई फ़ैसला करते या कोई बात कहते तो लोग उस की लाज रखते और उसे मान लेते। आपके शागिर्दों की तादाद बहुत ज़्यादा है। उनमें से बाअज़ दूसरे हमसाया देशों में इमाम और मुअल्लिम के तौर पर काम कर रहे हैं। बुर्कीना फासो में भी बहुत सारे बतौर मुअल्लिम और लोकल मिशनरी काम कर रहे हैं। फिर कहते हैं कि नेकी और तक़्वा और मुसाबक़त बिलख़ैर में दूसरों के लिए एक नमूना थे।

जब भी अहबाब-ए-जमात को कोई तहरीक करते तो सबसे पहले ख़ुद इस

में हिस्सा लेते। अगर कोई माली क़ुर्बानी की तहरीक होती तो सबसे पहले ख़ुद शामिल होते। कभी जमाती कामों में, जलसा जात में, इजतेमाआत और दीगर सरगर्मीयों में पीछे नहीं रहे। पांचों नमाज़ों की अदायगी मस्जिद में करते। नमाज़ तहज्जुद के पाबंद थे। अगर कभी किसी जमाअती सरगर्मी में मौजूद न होते तो इस का मतलब यह था कि या तो बीमार हैं या सफ़र पर गए हुए हैं। जमाती कामों में शिरकत के लिए कभी अख़राजात की पर्वा न करते। उनकी दो शादियां थीं जिनसे अल्लाह तआला ने उनको ग्यारह बच्चे अता किए।

ख़ालिद महमूद साहिब मुरब्बी हैं लिखते हैं कि ये लोग इख़लास-ओ-वफ़ा से मामूर थे। ख़िलाफ़त के शैदाई और फ़िदाई अहमदी थे। 2008 ई. में जो ख़िलाफ़त जुबली का साल था जब मैं ने घाना का दौरा किया था, जलसे पर वहां गया था तो हज़ारों अहमदी अहबाब बुर्कीना फासो और माली वग़ैरा से भी मुझे मिलने के लिए आए थे। इस मौक़ा पर घाना जमात ने ज़यافت और रिहायश के इंतेज़ामात भी अच्छे किए हुए थे लेकिन इस के बावजूद चंद अहबाब जो डोरी से आए थे ये लोग भी उनमें शामिल थे। उनको खाना मिलने में देर हो गई या खाना नहीं मिला। फिर काफ़ी देर से रात को बाज़ार से मंगवाया गया और दिया गया। इस पर मैं ने इन मुरब्बी साहिब को जब उनकी मुलाक़ात हुई कहा था कि उनको मेरी तरफ़ से माज़रत कर दें और दिलदारी करें। तो कहते हैं में उनके पास फ़ौरन गया, माज़रत की। आपका यह पैग़ाम जब दिया तो अल्हाज इबराहीम साहिब सदर जमात थे उन्होंने बयकवक़त बाक़ी लोगों के साथ कहा कि ख़लीफ़ा को हम देखने यहां आए थे, मिलने आए थे। जब देख लिया और मिल लिया तो हमारी थकान और भूख ख़त्म हो गई है। कोई शिकायत नहीं है। बल्कि हम तो आपस में बैठ के इस मुलाक़ात का ही वर्णन कर रहे हैं और इस का लुतफ़ ले रहे हैं। बहरहाल उस वक़्त मुझे भी परेशानी थी कि इतना लंबा सफ़र कर के आए हैं, बहुत सारे उस वक़्त साईकलों पर भी आए थे और उनका इंतेज़ाम नहीं हुआ। फ़ौरी इंतेज़ाम करवाने की कोशिश की गई लेकिन दूसरी तरफ़ उनका इख़लास-ओ-वफ़ा ऐसा था कि हैरान हो गया था। इस वक़्त भी मुझे उनका यही पैग़ाम मिला था और मैं उस वक़्त भी हैरान था कि ये कैसे मज़बूत ईमान के हैं।

अल्हाज महमूद डीको साहिब मुअल्लिम हैं यह कहते हैं कि शरीफ़ ओदा साहिब बेनिन के दौरे पर आए तो इमाम साहिब ने बुर्कीना फासो से बस पर सवार हो के रात सारा सफ़र किया और एक हज़ार किलो मीटर का सफ़र तै कर के सुबह तीन बजे वहां पहुंचे। तीस घंटे का थका देने वाला सफ़र था। वहां सड़कें भी अच्छी नहीं हैं और बड़े हश्शाश बश्शाश थे। आगे फिर लंबा सफ़र करना था वह भी उन्होंने उन के साथ किया और सब प्रोग्रामों में शामिल हुए।

उनको जमाती ख़िदमत का एक जोश था। बेनिन में मसाजिद देखकर बड़े ख़ुश होते थे और कहते थे ये देखो यह भी तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की दलील है। इसी तरह ग़ैर अहमदियों से जो बहसें होती थीं इस में ये अरबी में बड़ी फ़सीह-ओ-बलीग़ तक़रीरें किया करते थे। शरीफ़ ओदा साहिब के साथ भी मौलवियों की debate हो रही थी। उस वक़्त उन्होंने कोई ग़लत बातें कीं तो ग़ुस्सा में आ के उन्होंने उठ के जवाब देना चाहा लेकिन उनको जब ख़ामोश कराया गया तो फ़ौरन बैठ गए। फिर ग़ैर अहमदियों ने कहा कि अच्छा अगर तुम लोग समझते हो कि हम मुस्लमान हैं तो हमारे पीछे नमाज़ पढ़ो। तो उन्होंने उस वक़्त खड़े हो के कहा कि जो हमें काफ़िर कहते हैं। हमारे और वक़्त के इमाम को क़बूल नहीं करते ये कैसे मुम्किन है कि हम आपके पीछे नमाज़ पढ़ लें। या तो ये मान लो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वक़्त के इमाम हैं तो हम नमाज़ पढ़ लेते हैं।

बेनिन के एक रिटायर्ड लोकल मुअल्लिम हैं। वह कहते हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त से मुहब्बत की एक ज़िंदा तस्वीर थे।

वह कहा करते थे कि जब मुझे अहमदियत का पैग़ाम मिला जो पाकिस्तानी मुबल्लिग ने दिया तो मैं उसी दिन से अहमदी हो चुका था

मैं ने यह सीखा है कि दुनिया की फ़लाह सिर्फ निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त से वाबस्ता है और यही असल रास्ता है और मरते दम तक इस पर क़ायम रहूँगा।

मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि हक़ीक़तन जो उन्होंने कहा था वह उन्होंने कर दिखाया।

फिर बेनिन के लोकल मुअल्लिम ईसा साहिब हैं। वह कहते हैं कि मेरा एक लंबे अरसा से उनसे ताल्लुक़ था। एक ऐसे अहमदी थे जिनको किसी से कोई इख़तेलाफ़ नहीं था। वह हक़ीक़ी अहमदी थे। ऐसे अहमदी जो हर अमल में आगे थे, तब्लीग़ में, चंदे में, हर चीज़ में अव्वल थे। यही वजह है कि उनकी वजह से बाक़ी आठ अंसार भी उनके पीछे लब्बैक कहते हुए अपनी जानें ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बान करने वाले गए।

प्रिंसिपल जामिआ बुर्कीना फासो लिखते हैं किसी शख़्स ने एक ख़ाब देखी इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्ला ने अमीर जमात को यह लिख के भेजा कि "ख़ाब मुबारक है और इस का मतलब है कि मुल्क की मिट्टी क़बूल--ए-हक़ के लिए ज़रख़ेज़ है और मेरे दौरे के बाद इन शा अल्लाह सदाक़त को क़बूल कर के नूर से चमक उट्ठेगी। ख़ुदा करे कि ऐसा ही हो।"

(ख़त मुकर्रम ऐडीशनल वकील अल्तबशीर् साहिब, लंदन T.3360 तारीख़ 19 जून 1990 ई.)

मेरा ख़्याल है ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्ला का वहां दौरा तो नहीं हुआ। बहरहाल मैं दौरे पर 2004 ई. में गया था। इस के बाद कहते हैं आपने भी लिखा कि इसके बाद "मुझे पूरा यक़ीन है कि बुर्कीना फासो की सरज़मीन पर अहमदियत का जो बीज बोया गया वह जल्द दाइमी फल लाएगा।

बुर्कीना फासो के लोग हक़ीक़तन बड़े अज़ीम लोग हैं और मुझे ख़ुशी है कि ख़ुदा ने उनको अहमदियत के नूर से मुनव्वर किया है। मैंने जो बेदारी जमात बुर्कीना के अफ़राद में देखी है वह हैरत-अंगेज़ है। उम्मीद है कि अगले दो तीन सालों में इस दौरे के अज़ीमुश्शान नताइज ज़ाहिर होंगे और जमात तेज़ी से तरक़्क़ी करेगी इन शा अल्लाह।"

(ज़ीरख़त T.9653 तारीख़ यक्म मई 2004 ई.)

तो यह मैं ने अपने दौरे के बाद उनको लिखा था। अफ़्रीक़ा की जमातों में बुर्कीना फासो के अहमदियों में मैं ने एक ख़ास बात देखी है कि मुलाक़ात के वक़्त हर एक की यह कोशिश होती थी कि मुझसे गले लगे और फिर उन लोगों की मुहब्बत जो थी वह भी देखने वाली होती थी। प्रिंसिपल साहिब लिखते हैं कि आज महदी आबाद के मुख़लेसीन ने ग़ैरमामूली क़ुर्बानी देकर "हक़ीक़तन बड़े अज़ीम लोग हैं" पर मोहर तसदीक़ सब्त कर दी जो आपने लिखा था।

दूसरे अल्-हसन आग माली ऑयल साहिब (Alhassane Ag Maliel) हैं। उनकी शहादत के वक़्त उम्र इकहत्तर (71) वर्ष थी। पेशे के लिहाज़ से किसान हैं। 1999 ई. में अहमदियत क़बूल की। गांव के इबतेदाई अहमदियों में से थे। इबराहीम साहिब के साथ मिलकर डोरी मिशन में जाने वाले तहक़ीक़ाती वफ़द में शामिल थे। जब से आपने बैअत की इख़लास और वफ़ा में तरक़्क़ी करते चले गए। ख़िलाफ़त के साथ बहुत इख़लास का ताल्लुक़ रखते थे। नमाज़ बाजमाअत के पाबंद, तहज्जुद गुज़ार, चंदा जात में बाक़ायदा, अपनी फ़ैमिली के लिए अपने पीछे एक नेक नमूना क़ायम किया। मजमूई तौर पर आपने जमाअत के लिए जान, माल और वक़्त की जो क़ुर्बानी की वह ग़ैरमामूली है। आप बुर्कीना फासो की चार पाँच ज़बानें बोलते थे जो मुख़्तलिफ़ मुक़ामी ज़बानें हैं जिसकी वजह से आपका हल्क़ा-ए-अहबाब पूरे देश की जमातों में था। जलसा सालाना के मौक़ा पर दूसरे रीजन से आने वालों के साथ उनकी ज़बान जानने की वजह से बहुत घुल मिलकर रहते थे। लोग आपको बहुत पसंद करते। उनकी महफ़िल में बैठ कर महज़ूज़ होते। जब भी जमात की तरफ़ से कोई तहरीक होती इस में आगे बढ़कर हिस्सा लेते। गुज़शता साल जमात की तरफ़ से वक़्फ़-ए-आरिज़ी करने की तहरीक हुई तो महदी आबाद जमात में से सबसे पहले आपने नाम लिखवाया। सानिहा महदी आबाद में आपके जुड़वां भाई मुकर्रम हुसैन आग माली ऑयल साहिब की भी हुई।

हुसैन आग माली ऑयल साहिब ये भी जैसा कि बताया उन के जुड़वां भाई हैं। उनकी उम्र इकहत्तर (71) साल थी। उन्होंने भी 1999 ई. में बैअत करने की तौफ़ीक़ पाई। अपने गांव के इबतेदाई अहमदियों में से थे। अल्हाज इबराहीम साहिब के साथ डोरी मिशन में जा कर तहक़ीक़ करने वाले ग्रुप में शामिल थे। इस वक़्त महदी आबाद में बतौर ज़ईम अंसारुल्लाह ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। अंसार भाईयों को बहुत अच्छे तरीक़ से मुनज़्ज़म करने की सलाहियत रखते थे। उनको जमाती प्रोग्रामों और सरगर्मीयों में मुतहर्रिक रखते और तर्बीयत के मुतअद्दि प्रोग्राम मुनाक़िद करवाते रहते। मस्जिद की सफ़ाई और दीगर मुक़ामात पर वकार-ए-अमल करवाते। चंदा जात में बाक़ायदा और पांचों नमाज़ें मस्जिद में अदा करने की पाबंदी करते। नमाज़-ए-तहज्जुद बाक़ायदा अदा करने वाले थे। सानिहा महदी आबाद में जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है उनके जुड़वां भाई भी शहीद हुए थे। एक दिन दुनिया में आए और एक ही दिन दुनिया गए।

हमीदव आग अब्दुर्रहिमान साहिब। उनकी सतासठ (67) वर्ष उम्र थी। पेशे के लिहाज़ से ये भी किसान थे। 1999 ई. में उन्होंने भी अहमदियत क़बूल की। दिल के बहुत साफ़, बहुत हलीम स्वभाव वाले थे। हमेशा जमाती प्रोग्रामों में हिस्सा लेने वाले सफ़-ए-अव्वल में शुमार होते थे। किसी प्रोग्राम से गैरहाज़िर होते तो ये समझा जाता यक़ीनन कोई बहुत अशद मजबूरी या बीमारी होगी वर्ना गैरहाज़िर नहीं होते थे। इमाम इबराहीम साहिब के मददगार साथियों में से थे। अपनी फ़ैमिली को भी निज़ाम जमात के साथ जड़े रहने और जमाती प्रोग्राम में शिरकत की तलक़ीन करते रहते। ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साथ वफ़ा का ताल्लुक़ था। बहुत सा वक़्त मस्जिद में गुज़ारते। एम. टी. ए. प्रोग्राम देखते रहते। खासतौर पर ख़ुतबा बहुत बाक़ायदगी से और तवज्जा से सुनते।

सोलेह (Souley) आग इबराहीम। शहादत के वक़्त उनकी उम्र सतासठ (67) साल थी। पेशे के एतबार से यह भी किसान थे। नमाज़ बाजमाअत के बहुत पाबंद, बाक़ायदगी से चंदा जात अदा करने वाले, मजलिस अंसारुल्लाह के मुतहर्रिक रुकन थे और जमात के बहुत मुख़लिस थे। इबराहीम साहिब के दस्त-ए-रास्त और मददगार थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से साहब-ए-इलम थे। मज़हबी और इलमी गुफ़्तगु करना आपकी आदत थी। जब भी अंसार मैंबरान जमात में इलमी गुफ़्तगु हो रही होती आप ऐसी महफ़िल में पाए जाते। बहुत हलीम और शरीफ़ तबीयत के मालिक थे। हर छोटे बड़े के साथ हुस्न-ए--सुलूक करना आपके औसाफ़ में था। जलसा सालाना या किसी इजतेमा पर जाते हुए अगर देखते कि किसी के पास किराया की रक़म नहीं है या कम है तो अपनी तरफ़ से इस की मदद कर देते ताकि वह भी शामिल हो जाएं। इन दिनों में इस साल डोरी के इलाक़े से निकल कर सफ़र करना बहुत हिम्मत का काम था क्योंकि हर तरफ़ दहश्तगरदों ने अपनी दहश्त फैलाई हुई थी लेकिन इसके बावजूद तमाम ख़तरात को देखते हुए भी महदी आबाद से दिसंबर के आख़िरी हफ़्ता में होने वाले जलसा सालाना बुर्कीना फासो में शामिल हुए।

फिर उसमान आग सूओदे (Soudeye) साहिब हैं। उनकी उम्र उनसठ (59) साल थी। मुख़लिस और जांनिसार अहमदी थे। जमात के लिए माल और वक़्त की क़ुर्बानी करने वाले थे और आख़िर पर अल्लाह तआला ने जान की क़ुर्बानी की भी तौफ़ीक़ अता फ़र्मा दी। महदी आबाद की मस्जिद की तामीर के वक़्त पानी लेकर आते और तामीर के कामों में मुसलसल तआवुन करते और बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते रहे। नमाज़ों के बहुत पाबंद थे। चंदा देने में बाक़ायदा थे। जो कुछ कमा के लाते पहले इस से चंदा की रक़म अदा करते। क्या ऐसी सोच रखने वाले पैसे की लालच में बैअत करते हैं जैसा कि मुख़ालेफ़ीन कह रहे हैं? पेशे के एतबार से आप एक ताजिर थे। जूते फ़रोख़्त करने का कारोबार करते थे। किसी के पास अगर जूता ख़रीदने की ताकत नहीं थी या रक़म कम होती तो फिर भी उसे ख़ाली हाथ नहीं जाने देते थे। किसी को नंगे-पाँव वापस नहीं जाने दिया। अगर रक़म नहीं है या कम है तो कहते कोई बात नहीं बाद में देना।

फिर आग अली आग मगोईल (Maguel) ये 1970 ई. में पैदा हुए। उन्होंने अपने वालिद साहिब के साथ 1999 ई. में अहमदियत क़बूल की। पेशे के एतबार से किसान थे। जमात अहमदिया बैलारे (Belare) के मुअज़्ज़न थे। जब कुछ अरसा क़बल दहश्तगर्दी की वजह से उनको अपने गांव से नक़्ल-ए--मकानी करनी पड़ी तो उन्होंने महदी आबाद में सुकूनत इख़्तेयार कर ली। बहुत मुख़लिस अहमदी थे। नमाज़ों और चंदा जात में बाक़ायदा थे और जमात की तमाम सरगर्मीयों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले थे।

फिर मूसा आग अदराही (Idrahi) शहादत के वक़्त उनकी उम्र (53) साल थी। यह भी खेती बाड़ी का काम करते थे और जमात के कामों में हमेशा पेश पेश रहते। अहमदी होने से क़बल वहाबी फ़िर्क़ा के बहुत सरगर्म रुकन थे। नमाज़ों की बहुत पाबंदी करने वाले, तहज्जुद बाक़ायदगी से अदा करने वाले। मग़रिब की नमाज़ पर मस्जिद में आते तो इशा की नमाज़ पढ़ कर ही वापस घर जाते। मग़रिब और इशा का वक़्त मस्जिद में गुज़ारते और अल्लाह कि याद में मसरूफ़ रहते। उनके विषय में हर कोई गवाही देता है कि एक हक़ीक़ी मोमिन और मुख़लिस फ़िदाई अहमदी होने का अमली नमूना थे। मुझे दुआइया ख़ुतूत भी ये बाक़ायदा लिखते थे और कहते थे मैं भी ख़लीफ़-ए-वक़्त के लिए बाक़ायदा दुआ करने वाला हूँ।

फिर नौवीं हैं आग उम्र आग अब्दुर्रहिमान। उनकी शहादत के वक़्त उम्र चवालीस (44) साल थी। सबसे छोटी उम्र के थे जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। 1999 ई. में बीस साल की उम्र में उन्होंने अहमदियत क़बूल की। इसके बाद जमात के साथ ताल्लुक़ और वफ़ा में तरक़्क़ी करते चले गए। जमात महदी आबाद के बहुत मुख़लिस और फ़िदाई मैंबर थे। इमाम इबराहीम साहिब के दस्त-ए-रास्त थे। महदी आबाद के नायब इमाम भी थे। जब दहश्तगर्द मस्जिद में दाख़िल हुए तो उन्होंने इमाम इब्राहीम साहिब का पूछने के बाद पूछा कि नायब इमाम कौन है? तो उन्होंने बग़ैर किसी हिचकिचाहट के बताया कि मैं हूँ। आप हमेशा मस्जिद में आने वाले अव्वलीन अफ़राद में से होते। बहुत ख़ुशू--ओ-ख़ुज़ू के साथ नमाज़ अदा किया करते थे। नमाज़-ए-तहज्जुद की पाबंदी करने वाले थे। मस्जिद में अपने बच्चों को भी साथ लेकर आते और उनकी तर्बीयत का बहुत ख़्याल रखते और उनमें भी मुझे ख़त लिखने में बड़ी बाक़ाय-दगी थी। साईकल चलाने के बहुत माहिर थे और पूरे इलाक़े में लंबे लंबे सफ़र किया करते थे। चार दफ़ा से 265 किलोमीटर का फ़ासिला तै कर के वागह डोगो के खुद्दाम के इजतेमा में शामिल हुए। 2008 ई. में ख़िलाफ़त जुबली के जलसा में बुर्कीना फासो से घाना साईकलों पर जाने वाले क़ाफ़िले में यह शामिल थे।

यह जो हर लफ़्ज़ के साथ "आग" का लफ़्ज़ प्रयोग हुआ है वह मैं उनकी रिपोर्टों से जो समझा हूँ वह यही है कि वहां इसका मतलब "इबन" के हैं कि अमुक का बेटा। आग अमुक या अमुक आदमी इबने अमुक। अमुक अमुक का बेटा अमुक।

बहरहाल उनके बारे में मज़ीद ये लिखते हैं कि जब आठ अफ़राद को शहीद किया जा चुका तो आख़िर पर आग उम्र आग अब्दुर्रहिमान साहिब रह गए। अपनी उम्र के लिहाज़ से ये सबसे छोटे थे। दहश्तगरदों ने उनसे पूछा कि तुम जवान हो। अहमदियत से इंकार कर के अपनी जान बचा सकते हो तो उन्होंने बड़ी शुजाअत से जवाब दिया कि जिस राह पर चल कर मेरे बुज़ुर्गों ने क़ुर्बानी दी है मैं भी अपने इमाम और बुज़ुर्गों के नक़श--ए-क़दम पर चल कर ईमान की ख़ातिर अपनी जान क़ुर्बान करने के लिए तैयार हूँ। इस पर आपको बहुत बेदर्दी से चेहरे पर गोलीयां मार कर शहीद किया गया।

बुर्कीना फासो में उमूमी तौर पर हालात ख़राब हैं। दहश्तगर्द बहुत सारे इलाक़ों में दनदनाते फिर रहे हैं। कुछ दिन क़बल क़ायद साहिब मजलिस देनया (Denea) मर्कज़ में, सैंटर में, मिशन हाऊस में आए थे और उन्होंने बताया कि मेरी गांव में परचून की दुकान है। एक दिन दहश्तगरदों में से एक उनकी दुकान पर आया। यह बिल्कुल दूसरा इलाक़ा है और कुछ ख़रीदने के लिए आया। फिर इधर उधर देखता रहा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खलिफ़ा की तसावीर वहां उनकी दुकान पर लगी थीं।

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

उसने क़ायद साहिब से पूछा ये कौन हैं? ये किन की तस्वीर तुमने दुकान पर लगाई हुई है? तो क़ायद साहिब ने जवाब दिया कि मसीह मौऊद और उनके खलिफ़ा की तसावीर हैं। कहने लगा कि मसीह मौऊद नहीं बल्कि मुस्लमानों में से कुछ लोगों ने इकट्ठे हो कर एक ग्रुप बना लिया है ये वही लोग हैं और ये लोग काफ़िर हैं और जाने से पहले क़ाइद को कहा, धमकी देकर गया कि ये तसावीर यहां से उतार लो वर्ना अगली दफ़ा जब मैं आऊँगा और ये मौजूद हुईं तो फिर तुम्हारा बहुत बुरा हाल होगा। लेकिन बहरहाल क़ायद साहिब ने वे तस्वीरें उधर लगी रहने दीं। कुछ दिन के बाद वह दुबारा आया कुछ ख़रीदने के लिए तो देखा कि तसावीर उधर लगी हुई हैं। देख के चला गया तो कहते हैं कि क़ायद साहिब ने हमें यह वाक़िया बताया और साथ और तसावीर भी तलब की हैं। अब डरने की बजाय उन्होंने यह कहा कि अब मैं और जगहों पर भी तस्वीरें लगाऊँगा। ये सारा इलाक़ा एक लंबे अरसा से उन दहश्तगरदों के कंट्रोल में है और हुकूमत का वहां कंट्रोल कोई नहीं। इस इलाक़े का बॉर्डर जो है वह माली से मिलता है या दूसरी तरफ़ से डोरी का इलाक़ा नाईजेरि से मिलता है तो एक पूरा इलाक़ा, बैलट जो है तक़रीबन इस तरह उनके क़बज़ा मे है।

बहरहाल यह अहमदियत के चमकते सितारे हैं, अपने पीछे एक नमूना छोड़कर गए हैं। अल्लाह तआला उनकी औलादों और नसलों को भी इख़-लास-ओ-वफ़ा में बढ़ाए। दुश्मन समझता है कि उनकी शहादतों से यह इस इलाक़े में अहमदियत ख़त्म कर देगा लेकिन इन शा अल्लाह पहले से बढ़कर अहमदियत यहां बढ़ेगी और पनपेगी।

वहां जो इंतेज़ामिया है इस को और अमीर साहिब को भी वहां हिकमत--ए-अमली के साथ तब्लीग़ी प्रोग्राम बनाना चाहिए जहां पर उन लोगों की तसल्ली भी करानी चाहिए। अल्लाह तआला उनके लवाहिक़ीन को सब्र और हौसला भी देता रहे और उनके बुज़ुर्गों ने जिस मक़सद के लिए अपनी जान के नज़राने पेश किए हैं इस की एहमीयत को समझने की भी उनको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। बहरहाल एक हिक्मत और मंसूबा बंदी से अब हमें वहां काम करना होगा।

इस बारे में पहले ही मैं उनको कह चुका हूँ कि वहां जाएं और मुक़ामी लोगों से मिलकर जामे मंसूबा बंदी हिक्मत से करें।

शुहदा के ख़ानदानों की ज़रूरत पूरी करने के लिए, उनको पांव पर खड़ा करने के लिए ख़िलाफ़त-ए-राबिया से ही एक फ़ंड सय्यदना बिलाल फ़ंड के नाम से क़ायम है जिसमें से शुहदा के लिए ख़र्च किया जाता है। आजकल इस वाक़िया के बाद बाअज़ लोग इन्फ़रादी तौर पर भी और तंज़ीमें और जमाअत भी ये ज़रूरीयात पूरी करने के लिए कुछ रकमें भेज रही हैं ये उन के लिए है। हालाँकि जब फ़ंड एक क़ायम है तो सबको चाहिए कि अपनी रकमें जो भी देना चाहते हैं सय्यदना बिलाल फ़ंड में जमा करवाएं और फिर बता दें कि हमने ये रकमें जमा करवाई हैं और खासतौर पर हमारा मक़सद जो डोरी के, महदी आबाद के शुहदा हैं उन के लिए ख़र्च करना है तो बह-रहाल मर्कज़ इस के मुताबिक़ फ़ैसला कर लेगा।

मर्कज़ ने तो चाहे रकमें आएं या न आएं उन लोगों की ज़रूरीयात का ख़्याल रखना है और पूरा करना है और करेगा इन शा अल्लाह, लेकिन लोग जो देना चाहते हैं वे इस फ़ंड में, सय्यदना बिलाल फ़ंड में रकमें जमा करवाएं। और ये कोई इन शुहदा के ख़ानदानों पर एहसान नहीं है बल्कि हमारा फ़र्ज़ है कि उनकी ज़रूरीयात का ख़्याल रखें और उन्हें पूरा करें।

आख़िर में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इक़तेबास पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं : "यह मत ख़्याल करो कि ख़ुदा तुम्हें ज़ाए कर देगा। तुम ख़ुदा के हाथ का एक बीज हो जो ज़मीन में बोया गया। ख़ुदा फ़रमाता है कि यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा और हर एक तरफ़ से इस की शाख़ें निकलेंगी और एक बड़ा दरख़्त हो जाएगा।" इन शा अल्लाह। "अतः मुबारक वह जो ख़ुदा की बात पर ईमान रखे और दरम-यान में आने वाले इबतेलाओं से न डरे क्योंकि इबतेलाओं का आना भी ज़रूरी है ता ख़ुदा तुम्हारी आज़माइश करे।"

(रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 309)

अतः यह क़ुर्बानी करने वाले तो इस आज़माईश में पूरे उतरे। अब पीछे रहने वालों का भी अपने ईमान और यक़ीन में बढ़ने का इमतिहान है। अल्लाह तआला उनको भी तौफ़ीक़ दे और हमें भी तौफ़ीक़ दे कि हम अपने ईमान और यक़ीन में कामिल रहें।

अल्लाह तआला इन शुहदा के मुक़ाम को बलंद तर फ़रमाता चला जाये। उनकी क़ुर्बानियों को वे फल फूल लगाए जिसके नतीजा में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हक़ीक़ी तालीम को जल्द अज़ जल्द दुनिया में हम फैलता देखने वाले हों। जहालत दुनिया से ख़त्म हो और ख़ुदाए वाहिद की हक़ीक़ी बादशाहत दुनिया में क़ायम हो जाये।

इन शुहदा के जनाज़ों के साथ जो मैं पढ़ाऊंगा अभी नमाज़ों के बाद दो और मुख़लेसीन के ज़िक्र, जनाज़े भी हैं जिनमें से एक डाक्टर क्रीमउल्लाह ज़ीरवी साहिब हैं जो सूफ़ी ख़ुदाबख़्श ज़ीरवी साहिब के बेटे थे। यह अमरीका में रहते थे। चार जनवरी को उनकी तिरासी साल की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे।

उनके वालिद सूफ़ी ख़ुदाबख़्श साहिब ने सतरह साल की उम्र में 1928 ई. में कादियान जा कर ख़लीफ़ा सानी के हाथ पर बैअत की थी। करीमउ-ल्लाह ज़ीरवी साहिब हज़रत मलिक सैफ़ुलरहमान साहिब के दामाद भी थे। बड़े इलमी आदमी थे। बाअज़ कुतुब भी उन्होंने लिखी हैं। जमाती ख़िदमत की भी उन्हें बहुत तौफ़ीक़ मिली है। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ह ज़ीरवी साहिब की पत्नी अमतुल ज़ीरवी साहिबा का है जो क्रीमउल्लाह ज़ीरवी साहिब की पत्नी थीं। अमरीका में रहती थीं और मलिक सैफ़ुलरहमान साहिब की यह बेटी थीं। यह 6 जनवरी को अपने मियां की वफ़ात के दो दिन बाद अठहत्तर साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूमा मूसिया थीं और जैसा कि मैंने कहा मुल्क सैफ़फ़ुलरहमान साहिब की बेटी थीं। उनकी वालिदा का नाम अमतुल रशीद शौकत था जो रिसाला मिसबाह रबवाह की मुदीर रही हैं। उनकी पैदाइश कादियान की है। बड़ा इलमी ज़ौक़ रखने वाली महिला थीं। पढ़ी लिखी थीं। ऐम. एस. सी किया हुआ था। जमाती ख़िदमात की भी उनको तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआला मरहूमा से भी मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके भाई मुल्क मुजीब रहमान साहिब अपनी बहन और बहनोई के बारे में लिखते हैं कि बहुत मुहब्बत करने वाला जोड़ा था। उन्होंने बहुत मशक़्क़तें बर्दाश्त कीं लेकिन कभी किसी चीज़ के बारे में कोई शिकायत नहीं की। मैंने उन्हें कभी किसी के बारे में कोई मनफ़ी गुफ़्तगु करते नहीं देखा। दोनों इलम के गहरे समुंद्र थे। ज़िंदगी के आख़िरी लमहात तक हर किसी के साथ मुहब्बत करने वाले, उनकी ज़रूरीयात का ख़्याल रखने और बेपनाह प्यार-ओ-मुहब्बत करने वाले थे। माशा अल्लाह बड़ी भरपूर और बेहतरीन ज़िंदगी गुज़ारी। अपने मुआशरा और माहौल में दूसरों पर निहायत मुसबत असर डालने वाले और अच्छा असर-ओ-रसूख़ रखने वाले बुज़ुर्ग इन्सान थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

★ ★ ★

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT

AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 23 february 2023 Issue No. 8

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार

"अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिन-स्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

असल है। उसका आहार हैवानी है। हैवान दरख़्तों इत्यादि से ग़िज़ा हासिल करते हैं। आगे वह दरख़्त और बूटियां आसमानी पानी से पलते हैं और वह पानी इन्सान के पीने के काम भी आता है। फिर उसी पानी से नबातात उगती हैं जो इन्सान की ग़िज़ाएँ बनती हैं। ये सब इश्याय रात-दिन सूरज चांद और सितारों की तासीरात से नशो नुमा पाती हैं। दूसरी तरफ़ उनके क़ियाम का ज़रीया समुंद्र है जिस में पानी का ज़ख़ीरा रहता है और इस से पानी छन कर फिर इन्सानों को मिलता है और इस समुंद्र को अपने हाल पर रखने के लिए पहाड़ हैं जो पानी जमा रखते हैं। वहां से दरियाओं के ज़रीया से पानी बहता है जो ख़ास रास्तों पर चल कर समुंद्र में आकर गिर जाता है और सतहज़मीन पर फैल नहीं जाता कि ज़मीन इन्सानों की रिहायश के काबिल न रहे। इन सब उमूर से एक स्पष्ट नतीजा निकलता है और वह यह कि दुनिया की हर चीज़ एक दूसरे से वाबस्ता है और दुनिया मुतफ़र्रिक़ चीज़ों का मजमूआ नहीं बल्कि उस का इख़्तेलाफ़ ऐसा ही है जैसे एक ज़ंजीर की कड़ियाँ। अगर एक कड़ी निकाल दी जाए तो ज़ंजीर, ज़ंजीर नहीं रहती। इसी तरह कायनात में से एक चीज़ को निकाल दो सारी दुनिया तबाह हो जाएगी। समुंद्र ख़ुशक कर दो पानी ख़त्म हो जाएगा दरिया ख़ुशक कर दो समुंद्र ख़ुशक हो जाएगा। इस नशेब को जो दरियाओं के लिए रास्ता बनाता है दूर कर दो सब दुनिया पर पानी फैल जाएगा और ज़मीन रिहायश के काबिल न रहेगी। पहाड़ मिटा दो ज़मीन पर ज़लज़ले आएँगे और इन्सान हलाक हो जाएगा। दरियाओं के लिए पानी का ज़ख़ीरा बाक़ी न रहेगा और वह सारा पानी यकदम समुंद्र में जा गिराएँगे अगर एक तरफ़ दुनिया सेलाब की नज़र होगी तो दूसरी तरफ़ साल भर तक पानी के मुहय्या रहने की सूरत मफ़क़ूद हो जाएगी। चांद सितारों को मिटा दो तो जो उनकी वजह से पैदाइश आलम पर-असर है वे जाता रहेगा और ज़मीन अपनी हालत पर न रहेगी। सूरज को अलग कर दिव्य बादलों का सिलसिला जाता रहेगा और लोग पानी को तरस जाएंगे और सबज़ियों का पकना बंद हो जाएगा और इन्सान की सेहत ख़राब हो जाएगी और उसकी हैवानी ग़िज़ा के पैदा होने का भी इमकान न रहेगा। ग़रज़ ये सब कायनात मिलकर इन्सान की ख़िदमत कर रही है और उस का हर हिस्सा दूसरे हिस्सा के क़ियाम का ज़रीया है। जब यह हाल है तो फिर दो ख़ुदा का अक़ीदा किस तरह दुरुस्त हो सकता है। अगर दुनिया को कई ख़ुदाओं ने पैदा किया है तो वह कौन सा हिस्सा है जिसके बारे में कहा जा सकता है कि वह दूसरे से आज़ाद है कि समझा जा सके कि उसे किसी और ने पैदा क्या होगा और अगर सारी कायनात एक ज़ंजीर की कडियों पर मुश्तमिल है तो इस का बनाने वाला एक ही ख़ुदा तस्लीम करना पड़ेगा। सिवाए इसके कि यह कहा जाए कि ख़ुदा तआला में सब कायनात बनाने की क़ुदरत न थी। इस लिए कई ख़ुदाओं ने मिलकर काम तक़सीम कर लिया और पहले से तजवीज़ करदा नक़्शा के मुताबिक़ हर इक ने अपना अपना हिस्सा पूरा किया लेकिन यह अक़ीदा मुशरिकों का भी नहीं और है भी ख़िलाफ़ अक़्ल क्योंकि नाक़िस वजूद ख़ुदा नहीं हो सकते। अतः इस दलील की मौजूदगी में एक ही नतीजा निकलता है कि اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ तुम्हारा ख़ुदा वही है जो एक है।

दूसरा मज़मून पहली आयात मे यह बताया गया था कि वह सब वजूद जिनको ख़ुदा कहा जाता है फ़ौत हो चुके हैं। अतः जब वह फ़ौत हो चुके हैं तो फिर भी एक ही ख़ुदा बाक़ी रह जाता है जो मौत से बाला है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 151 प्रकाशन 2010 कादियान)

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad